A·prie 1990

मंत्र·तंत्र·यंत्र

विज्ञान

सिद्धाश्रम साधक परिवार
जोधपुर

अप्रैल
९०

जीवन में पहली बार सम्पन्न

काया कल्प साधना सिद्धि

(कामदेव रति साधना के साथ)

[१९-५-९० जोधपुर]

"काया कल्प" सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य है, और भारतीय योगियों और महर्षियों ने स्वीकार किया है, कि काया कल्प साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, परन्तु आगे चल कर तो यह साधना प्रयोग सर्वथा लुप्त ही हो जायेगा, क्योंकि इस प्रकार के प्रयोग की जानकारी बहुत ही कम ऋषियों को ज्ञात है।"

और वास्तव में ऋषि की वाणी सत्य सी प्रतीत हो रही है, क्योंकि कायाकल्प साधना पूरे भारतवर्ष की साधनाओं में सर्व श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण थी, जिसके माध्यम से पुरुष या स्त्री अपने रोग, दुःख, दारिद्र्य, कष्ट, पीड़ा, बाधायें, और कमजोर शरीर के स्थान पर उन्नत यौवनवान, शरीर प्राप्त करता है, उसका सारा शरीर जवानी की महक से सुगन्धित हो उठता है, और साथ ही जीवन की समस्याएं, बाधाएं, अड़चनें और कठिनाइयां भी दूर हो जाती हैं क्योंकि इसे "पुष्पधन्वा प्रयोग" या "कामदेव रति साधना प्रयोग" भी कहा गया है।

स्वयं महर्षि च्यवन ने इस प्रयोग को सम्पन्न कर पूर्ण यौवन प्राप्त किया। विश्वामित्र ने इस प्रयोग के माध्यम से अपने पूरे शरीर को परिवर्तित कर यौवनवान बना दिया। विदुषी गार्गी ने इसी प्रयोग को सम्पन्न कर अपनी जर्जर और कृश देह, सफेद बाल तथा झुर्रीदार चेहरे के स्थान पर पूर्ण यौवन और सौन्दर्य प्राप्त कर यह स्पष्ट कर दिया कि वास्तव में ही यह साधना खरे सोने के सिक्के की तरह है, जिसके माध्यम से पूरे शरीर और जीवन का काया कल्प संभव है।

काया कल्प

यहां पर मैंने शरीर और जीवन के कायाकल्प शब्द का प्रयोग किया है, जहां इस प्रयोग से व्यक्ति अपने सभी रोगों से मुक्ति पाता है, शरीर की कमजोरी दुर्बलता कृशता और क्षीणता पर विजय प्राप्त करता है, और इस साधना के बल पर वह सुन्दर आकर्षक और अद्वितीय शरीर एवं यौवन प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

साथ ही साथ यह जीवन का कायाकल्प भी है, अब तक आपने जिस तरीके से भी जीवन जीया है, उसमें बाधाएं अड़चनें, कठिनाइयां, परेशानियां और चिन्ताएं ही हाथ लगी हैं परन्तु इस प्रत्यक्ष साधना की यह विशेषता है, कि इसके माध्यम से जीवन की सारी बाधाएं और अड़चनें तो समाप्त होती ही हैं, साधना सम्पन्न करने वाला व्यक्ति समस्त बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों को समाप्त कर जल्दी से जल्दी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इसीलिए तो इस साधना को "सम्पूर्ण जीवन का सौन्दर्य" कहा है जो कि पूरे शरीर का तो काया कल्प करती ही है, जीवन को भी परिवर्तित कर उसे आनन्द दायक बना देती है।

वर्ष-१०

अंक- ४

अप्रैल-१९९०

मुद्रक प्रकाशक लेखक
एवं
सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग
हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०१

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

॥ ॐ दिव्यो वर्ता च श्रियं सः गुरवे सह हितेनः ॥

मेरे परम पूज्य गुरुदेव ! आप दिव्य हैं, सिद्धियों और हम शिष्यों के बीच अटूट कड़ी हैं, हमें सिद्धियां प्रियता एवं श्रेय प्रदान करने वाले हैं, आप मेरे पूरे परिवार के हितैषी हैं, आपको मैं प्रणाम करता हूं।

सब जगह खबर कर दो

कि

वसन्त ऋतु गुनगुनाने लगी है

वसन्त ऋतु को कोई निमंत्रण नहीं देता, कोई आमंत्रण-पत्र उसे नहीं पहुँचाया जाता, परन्तु वह अपनी मस्ती के साथ, अपनी तरंग के साथ आ जाता है और उसके आते ही हवा में नशीलापन छा जाता है, आकाश ज्यादा सुन्दर दिखाई देने लगता है, दसों दिशाएं धानी रंग के वस्त्र पहिनने लगती है और पूरी पृथ्वी पर हरा मखमली गलीचा बिछ जाता है।

और सिद्धाश्रम साधक परिवार के जीवन में भी वसन्त ऋतु का आगमन होने लगा है, इस संस्था में एक नयी चेतना, एक नया जोश, एक नयी उमंग दिखाई देने लगी है, शिष्यों के चेहरों पर मुस्कराहट की लकीरें पड़ी जाने लगी हैं, उनके होठों पर गुरुदेव के गीत गुनगुनाये जाने लगे हैं, और उनकी आंखों में एक चमक, एक मस्ती और एक साधना का प्रवाह हिलोरे लेने लगा है।

और यह परिवर्तन पूरे भारतवर्ष को दिखाई देने लगा है, कोयल की कुहुक और मयूर का नृत्य प्रारम्भ होने लगा है, लगने लगा है, कि ये साधक अपने देह से परे हट कर "आत्म" से साक्षात्कार करने की तैयारी में लगे हैं, मैं अनुभव करने लगा हूं कि उनके जीवन में देह मुक्तता आने लगी है, साधनाओं को आत्मसात करने की क्रिया जाग्रत होने लगी है, इनके जीवन में एक नई करवट, एक नया स्वप्न, इन्द्रधनुषी रंग बिखेरने लगा है कि ये अपनी देह से परे हट कर पूर्ण रूप से गुरु में एकाकार हो सकते हैं, उनके हृदय में उतर सकते हैं, आत्मा का परमात्मा के साथ पूर्ण संबंध स्थापित कर सकते हैं।

गुरुदेव जी ने ठीक ही कहा है, कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक जीवन का उत्थान नहीं हो सकता, एक प्रकार से हम मृत्यु के पाश में घिर कर बैठे होते हैं, ऐसी स्थिति में न तो वर्षा की फुहार के आनन्द का अनुभव होता है और न वसन्त की पुरवाई बयार का। न तो मेघों का गर्जन आनन्द देता है, और न धरती की सौंधी सुगन्ध का, क्योंकि वे अंधेरे में भटक रहे होते हैं, क्योंकि वे अपने परिवार, पत्नी और पुत्र के बीच घिरे हुए होते हैं, क्योंकि वे जीवन में आनन्द लेना ही भूल गये हैं, उनके जीवन का रस सूख गया है, क्योंकि वे अपनी देह में हैं।

और नवरात्रि के अवसर पर गुरुदेव जी ने दोनों हाथ उठा कर सिद्धाश्रम की साक्षी में स्पष्ट रूप से कहा था, कि इन सब शिष्यों में, इनकी धमनियों में मेरा ही रक्त प्रवाहित है, मैं अपने आपको इनके हृदय में स्थापित करने की क्रिया कर रहा हूं, और शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा था कि जीवन में पूर्णता तक पहुंचने का रास्ता श्रद्धा और समर्पण से ही है, साधनाओं के माध्यम से उन देवताओं को प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु जीवन का आनन्द अनुभव नहीं कर सकते। जीवन में आनन्द-रस से सराबोर नहीं हो सकते, क्योंकि यह तभी हो सकता है, जब पूर्ण रूप से आगे बढ़ते हुए अपने आपको गुरुदेव में निमग्न कर

सको, और समर्पण ही जीवन की पूर्णता है, समर्पण किसी स्कूल या विद्यालय में सिखाया नहीं जाता, नदियों को समर्पण करना कोई सिखाता नहीं है, बसन्त ऋतु में कोयल को कुहकने का कोई ज्ञान नहीं देता, दीपक पर अपने आप को जला देने की क्रिया पतंगे को कोई बताता नहीं है, यह तो आत्म चेतना है, और यह चेतना पूरे भारत वर्ष के साधकों में बिजली की तरह चमकने लगी है, और उससे एक नवीन जोश, एक नवीन चेतना, एक नवीन उमंग का प्रादुर्भाव होने लगा है।

यदि समर्पण का क ख ग जानना है तो फैजाबाद के **एस०के० बनर्जी** से सीखना चाहिए, जो अपने गृहस्थ और समर्पण में बराबर संतुलन बनाये हुए हैं और सेवा की भावना उनकी पत्नी **गीता बनर्जी** से सीखनी चाहिए, जिसकी आवाज में कोयल की कुहुक है और भावनाओं में गुरु की पूर्ण सेवा। जिन्होंने लोगों में चेतना पैदा करने को ही साधना समझ लिया है, जिन्होंने जीवन के उज्ज्वल पथ पर पांव रख दिये हैं, जो पूर्णता तक पहुंचने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। और मानिकपुर के **एस०के० मिश्रा** पर परिस्थितियों के प्रहार हो रहे हैं, परन्तु वह एक ऐसा अंगारा है, जिसने अपनी चमक खोई नहीं है, विपरीत परिस्थितियों की राख इस अंगारे पर पड़ी हुई दिखाई दे रही है, परन्तु उसकी चमक, उसकी लपक, उसकी तेजी, **और गुरु के प्रति** अन्तरंग समर्पण उसमें बरकरार है, और वह मिट नहीं सकता। जिसने चित्रकूट शिविर की व्यवस्था दी, जिसने वाराणसी शिविर को योगदान दिया, और जिसका प्रत्येक क्षण गुरु के समर्पण की तराजू पर रहा है।

मंडी हिमाचल प्रदेश में पूरी तरह से प्रकाश लगाने वाले एम०आर० **वशिष्ठ** अपने आप में सम्पूर्ण व्यक्तित्व हैं, जिसने अकेले ही हिमाचल प्रदेश की धड़कनों को स्पन्दित किया है, वहां के कण कण में साधना के प्रति चेतना जाग्रत की है, और इसी प्रकार नेपाल काठमाडू में **सनद कुमार अधिकारी** ने अकेले ही इतना कार्य किया है जितना कार्य एक संस्था भी नहीं कर सकती, दुबले पतले इस व्यक्तित्व के होठों पर **"गुरुदेव"** शब्द के अलावा कोई मंत्र नहीं है, और उसे अन्य किसी मंत्र की आवश्यकता भी नहीं है।

राय बरेली में **राजेन्द्र भदौरिया** एक समग्र तेजस्वी व्यक्तित्व हैं, जो इस जन्म से नहीं, कई जन्मों से गुरुदेव से जुड़े हैं, और जिन्होंने जीवन का सार संस्था की प्रगति में ही समझ लिया है, जिसका प्रत्येक क्षण संस्था और गुरुदेव जी के लिए ही व्यय होता है, और उनकी बेटी **दीपा भदौरिया** ने जीवन भर साधना के पथ पर चलने का जो निश्चय किया है वह अद्वितीय है। अलीगढ़ की **चन्द्रवती** देवी ने गुरु सेवा का जो उदाहरण संस्था के सामने रखा है, वह सही अर्थों में सेवा की परिभाषा है, जिसका प्रत्येक क्षण गुरु पूजन में ही व्यतीत होता है। मुजफ्फरनगर के **डा० पी०सी० अग्रवाल** पूरी तरह से समर्पित साधक हैं, और थोड़े ही समय में जिस तेजी के साथ वे साधना में अग्रसर हुए हैं, वह साधकों के लिए शिष्यों के लिए अनुकरणीय है, **निधी, नेहा, निष्ठा एवं आशा** ने जिस प्रकार से पूर्ण गुरुमय होने की क्रिया चैतन्य की है, वह अपने आप में सेवा और साधना की एक मिसाल है।

निर्धनता में भी प्रसन्नता के फूल उगाने वाले **अशोक** और शोभा गोयल आंधियों के बीच में अडिग रहे हैं, चन्द्रपुरी के रूप में आगन्तुक साधकों का जिस प्रकार से वे सहयोग करती हैं, वह इस बात की साक्षी है, कि सेवा और समर्पण में निर्धनता आड़े नहीं आती। गाजियाबाद के **चन्द्रगुप्त जायसवाल, स्नेह** और उनका परिवार सेवा की साक्षात मिसाल हैं, जो व्यस्त तो हैं, पर संस्था के प्रति उनके हृदय में एक चेतना है, अलीगढ़ के **नन्दलाल** शर्मा यद्यपि विवाह के बाद कुछ धूमिल से अवश्य अनुभव हुए, पर यह धूमिलता ठीक वैसी ही है जैसे सूर्य के ऊपर छोटा सा बादल का टुकड़ा आ गया हो, उनमें गुरु के प्रति और संस्था के प्रति असीम प्यार है। पटियाला के आत्माराम महन्त अनेक बाधाओं और समस्याओं से घिरे रहने के बावजूद भी एक कर्मठ और साहसी साधक हैं, जिन्होंने गुरुदेव जी को ही अपना सर्वस्व मान लिया है।

टिहरी के **एस०एम० गुप्ता** के जीवन का उद्देश्य संस्था को पूरे भारत वर्ष में चेतनायुक्त बनाना है, लातूर

श्री मालती एक श्रद्धायुक्त महिला हैं, जिनमें नम्रता है, श्रद्धा है और गुरुदेव जी के प्रति भाव चेतना है, बम्बई की सरला पण्ड्या और उनके पुत्र केतन पण्ड्या से सेवा का पाठ पढ़ा जा सकता है, जो सजग रह कर गुरुसेवा को ही अपना गायत्री मंत्र मान लिया है। प्रतापशंकर पण्ड्या, रणजीत चौबे अपनी अपनी भावनाओं में रहते हुए भी संस्था के कार्य में बराबर संलग्न हैं। हैदराबाद के गिरिजाशंकर शर्मा और राजेन्द्र शर्मा के जीवन में कितने भी तूफान आ जांय, अपनी साधना और सेवा से वे विचलित नहीं हो सकते। और माँ कलावती तो पूर्णतः गुरुयुक्त बन गई है, जिसके जीवन का रोम रोम गुरु के प्रति समर्पित है। बड़ौदा के प्रवीण जोशी समर्थ साधक हैं, पर अभी उन्हें स्वयं अपनी शक्ति का पूरी तरह से भान नहीं है, और सांसारिक उलझनों में उलझ कर रह गये हैं, फिर भी उनमें चेतना की कोई कमी नहीं है, बोरसद के केशु भाई सोनी अहमदाबाद के जीवन सिंह राजपूत आदि निरन्तर संस्था की पगडण्डी पर गतिशील हैं।

शाह चन्दूलाल अपने आप में एक साहसी और पूरी तरह से समर्पित व्यक्तित्व है, जो अपने ही दम खम पर निरन्तर पत्रिका परिवार का विस्तार करते ही रहते हैं, जिनमें नम्रता है, गुरु के प्रति समर्पण है, और संस्था के प्रति स्नेह है, लोनावाला के नैयर संस्था के प्रति समर्पित तो हैं, परन्तु शायद अपने कार्यों में ज्यादा उलझ जाने की वजह से चाहते हुए भी बहुत कुछ नहीं कर पाते, फिर भी उनके हृदय में गुरुदेव के प्रति गहराई से भाव स्नेह है। रोहतक के चन्दा सिंह पहल को यदि सेवा का स्वरूप कह दिया जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी, जिन्होंने संस्था को ऊंचाई तक उठाना ही साधना समझ लिया है।

कैथल (हरियाणा) के सतीश कात्याल एक प्रखर व्यक्तित्व के साथ संस्था में तेजी के साथ आगे बढ़े हैं; डगशाला के सैलर ग्रीन ने जिस प्रकार से संस्था को पूर्णता देने का प्रयास किया है, उसकी कोई मिसाल नहीं है।

बस्ती के हरिराम चौधरी, वासुदेव पाण्डेय, बनारस के आनन्दभूति मिश्र, सुरियावां के लालबाबा, बांदा के प्रेममित्र ब्रह्मचारी, लखनऊ के आर०एन० खन्ना तथा पी०एम० अग्रवाल, कानपुर के राजेश कटियार, मिरजापुर के वाई०एस० यादव, आगरा के शचीन्द्र सक्सेना, जौनपुर के कृष्णकान्त दीक्षित, अम्बाला के रणधीर सिंह, पानीपत के ओंकारेश्वर शर्मा, निर्भय सक्सेना, करनाल के महेश उपाध्याय, कुरुक्षेत्र के इन्द्रपाल, यमुना नगर के डा० महेन्द्र गुप्ता, मोहाली के बलबीर सिंह वैश्य, मंडी के कर्मचन्द शर्मा, और कुल्लू के मानसिंह आदि रात दिन संस्था के लिए ही कार्य कर रहे हैं।

इसी प्रकार बदरपुर के बी०डी० शुक्ला, दिल्ली के मणिराम गुप्ता, सनावद के पूर्णेश चौबे, जबलपुर के महेश चतुर्वेदी, शकुन्तला श्रीवास्तव, छिन्दवाड़ा के महेश विश्वकर्मा, भोपाल के चन्द्रशेखर हिंगवासिया, ग्वालियर के हरीश गौड़, अम्बिकापुर के कैलाश नारायण श्रीवास्तव, बंशीधर तिवारी, हेमन्त श्रीवास्तव, सनावद के अरुण कुमार, सूरत के रणछोड़ भाई, वलसाड़ के जयेश देसाई, मुंगेर के चन्द्रशेखर प्रसाद, मुजफ्फरपुर के ज्वाला प्रसाद, जमुआर, तथा देवगढ़ के वेदानन्द झा, आदि अत्यन्त सक्रिय हैं, इसके अलावा बम्बई के झुनझुनिया दम्पत्ति, छोटेलाल त्रिवेदी, डॉ० मालविया, के०एम० वर्मा, सुनील सिंह, प्रह्लाद खन्ना आदि यथासंभव प्रयत्न कर ही रहे हैं।

और इस प्रकार से सैकड़ों दीपक लग गये हैं, जो अपनी रोशनी से अन्धकार को दूर हटा रहे हैं, और ऐसे सैकड़ों नाम हैं, जो इन पन्नों पर दे नहीं सका हूं, पर जो सही अर्थों में इस संस्था की नींव में छिपे रहने वाले पत्थर हैं, जिन पर इस संस्था का भवन निर्मित हो रहा है।

और मैं फिर गुरुदेव जी के शब्दों को ही दोहरा रहा हूं कि अब पूरी दुनियां को बता दें, कि बसन्त ऋतु आ गई है, और अपने साथ पुरवाई हवा, सुरमई सांझ और कोयल की कुहुक लेकर आई है, जिसके आगमन से संस्था के गुलाब मुस्कराने लगे हैं, और साधकों के प्राण पूज्य गुरुदेव जी के व्यक्तित्व में समाहित होने के लिए मचल रहे हैं

—योगेन्द्र निर्मोही

कथ्य

साक्षी है सिद्धाश्रम

सिद्धाश्रम, पृथ्वी को हमारे पूर्वजों, ऋषियों, देवताओं और दसों दिशाओं का वरदान है, जिसकी वजह से इस घोर भौतिकता में भी आध्यात्मिकता का संतुलन बना हुआ है, और जहां पर पहुंचने का स्वप्न प्रत्येक [illegible] का रहा है।

सिद्धाश्रम ने समय-समय पर पृथ्वी वासियों को उच्च कोटि के महामानव दिये, जब जब भी भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन बिगड़ने लगा, तब तब उसने संतुलन को बनाने के लिए वशिष्ठ को भेजा, विश्वामित्र को तैयार किया, राम को अवतरित किया, कृष्ण को आम जनता के बीच भेजा, बुद्ध ने ध्यान योग को उसकी उपस्थिति में प्रचलित किया; और स्वामी विशुद्धानन्द, माँ आनन्दमयी और कई महामानव हम सब लोगों के बीच उपस्थित हुए।

यहां मैं "हमसबलोग" शब्द का प्रयोग कर रहा हूं, क्योंकि दूर खड़ा हुआ हिमालय हमें आनन्द नहीं दे सकता, इसकी अपेक्षा हिमालय पर चढ़ना, उसकी घाटियों में विचरण करना, ज्यादा अनुकूल एवं सुखदायक है, ठीक इसी प्रकार सिद्धाश्रम ने भी इन सब लोगों को सामान्य जनता के बीच भेजा, उसका चिन्तन यही था, कि ये व्यक्ति भी सामान्य जनता की तरह रहें, सामान्य व्यक्तियों की तरह दुःखों, परेशानियों को, बाधाओं को सहन करें, सामान्य व्यक्तियों की तरह हर्ष और विषाद, दुःख और दैन्य, मित्रता और प्रहार की अनुभूतियों को सहेजें, और आम व्यक्तियों की तरह घुलमिल कर रहें, तभी आम व्यक्ति उसे अपना समझता है, अपने समान अनुभव करता है, और एक नयी दिशा दृष्टि ग्रहण करता है।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि मैं तुम लोगों के बीच जीवन्त जाग्रत और सप्राण व्यक्तित्व हूं, भौतिकता और आध्यात्मिकता के संतुलन को

जिन्दगी का आनन्द तो मीरा से सीखा जा सकता है, जो लोक लाज की बिना परवाह किये कृष्ण के रंग में रंग गई और रंगते ही मीरा के पैरों में चंचलता आ गई चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, और होठों पर आनन्द के गीत फूट पड़े और यह तुम भी प्राप्त कर सकते हो, इसके लिए पैरों में दृढ़ता होनी चाहिए, और आंखों में एक चमक।

बनाये रखना एक कर्तव्य है, सामान्य साधकों के बीच उनकी तरह ही हर्ष विषाद, दुःख और दैन्य को अनुभव करते हुए, जीवन के प्रत्येक क्षण को जीना है, और मैं इस प्रकार के जीवन में तुम लोगों को यह भान कराना चाहता हूं, कि इस प्रकार की परिस्थितियों में भी मुस्कराया जा सकता है, इस प्रकार की परिस्थितियों में भी अडिग रह कर अपने लक्ष्य की ओर पहुंचा जा सकता है, और अंधकार में भी ज्ञान के दीपक जलाये जा सकते हैं, और आलोचनाओं की पंचाग्नि के बीच बैठ करके भी अपनी बात दृढ़ता के साथ कही जा सकती है, तुममें और मुझमें इतना अन्तर है, कि तुम जब जाओगे तो अपने साथ दुःख और दैन्य, कठिनाइयों और बीमारियों की पोटली लेकर जाओगे, और मैं कपड़े झटक कर निर्विकार भाव से एक तरफ खड़ा हो सकूंगा।

और यह मेरे दृढ़ व्यक्तित्व की प्रबलता है, जीवन के पच्चीस यौवन हिमालय को नापने में व्यतीत कर दिये, और उसकी प्रत्येक घाटी, उसके प्रत्येक जर्रे पर कदमों के निशान बना दिये, क्योंकि उस सोये हुए हिमालय को जगाना था, उन गिरी कन्दराओं में घुस कर बैठे हुए योगियों को खींच कर बाहर लाना था, उन भारतीय विद्याओं को पुनर्जीवित करना था, जो हमारी थाती है, और उन देवताओं को हिमालय में पुनः साकार करना था, जो भौतिकता की गर्द में खो से गए थे।

और मैंने हिमालय के जर्रे-जर्रे के फोटोग्राफ खींचे, एक हाथ में कमण्डल था, और दूसरे हाथ में कैमरा, शरीर पर धानी लंगोटी थी, तो कन्धों में एक बैग [illegible], और उन बड़ी बड़ी सन्यासियों का पुराने [illegible] की तलवारें भांज रहे थे, कि सन्यासी के पास कैमरा? और मैं सहज भाव को प्राप्त किये विचरण कर रहा था, क्योंकि मुझे बहुत कुछ देना था, मुझे अपनी शक्ति प्रतिरोधात्मक रूप में व्यय नहीं करनी थी।

और यही स्थिति बनारस के पण्डितों के बीच जब मंच पर मैंने कहा, कि इस प्रकार से वेदों का अशुद्ध उच्चारण ब्राह्मणत्व का क्षय है, तो उनके मुंह से गालियों की अजस्र धारा बह निकली, और लाठियों के प्रहार से इस शरीर को लहूलुहान कर गंगा में फेंक दिया, पर दूसरे ही दिन उसी मंच पर मैं खड़ा हुआ ललकार रहा था, कि लाठियों से शरीर को तोड़ा जा सकता है, मेरे ज्ञान, मेरे चिन्तन, मेरी विचार धारा को नहीं।

और यही स्थिति सिद्धाश्रम की थी, वहां पर तपस्वी तो थे, पर श्मशान की तरह खामोशी थी, वहां पर ज्ञान का चिन्तन तो था, परन्तु सुनसान वीरान और मुरझाये हुए चेहरे चारों ओर विचरण कर रहे थे, ऐसा लग रहा था कि जैसे किसी श्मशान में आ गया होऊं, और पहली बार

✯

मेरे दोनों हाथ तुम्हें बुलाने के लिए बढ़े हैं, मेरे हाथ तुम्हें समर्पण सिखाने के लिए खुले हैं, मेरा हृदय तुम्हें समाहित करने के लिए आतुर हुआ है, ऐसी स्थिति में एक क्षण के लिए रुकना या ठिठकना जीवन को कमजोर करना है, यह समय तो तेजी के साथ आगे बढ़ कर समाहित हो जाने का है, और यही तुम्हारे जीवन की पूर्णता है।

❁

जीवन में तुम्हें रुकना नहीं है, निरन्तर आगे बढ़ना है क्योंकि जो साहसी होते हैं, जो दृढ़ निश्चयी होते हैं जिनके प्राणों में गुरुत्व का अंश होता है, वही आगे बढ़ सकता है, और इस आगे बढ़ने में जो आनन्द है, जो तृप्ति है, वह जीवन का सौभाग्य है।

★

गृहस्थ से भागने की जरूरत नहीं है, जरूरत है, एक तरफ खड़े होकर देखने की, तुम्हारी एक आंख गृहस्थ पर हो, तो दूसरी आंख गुरु चरणों में नमन युक्त होनी चाहिए, तब तुम्हारे जीवन में कोई न्यूनता रहेगी ही नहीं, क्योंकि वह नमन युक्त आंख तुम्हारे जीवन को पूरी तरह से संवार देगी, सजग कर देगी, प्रकाशित कर देगी।

❁

साधक और साधिकाओं को सिद्ध योगा झील में स्नान करने की प्रक्रिया दी, पहली बार सिद्धाश्रम की धरती पर अप्सराओं ने नृत्य किये, पहली बार मुरझाये हुए चेहरों पर मुस्कुराहट को उतारने दिया, पहली बार उस श्मशान की खामोशी में मस्ती, आनन्द और सौन्दर्य के पुष्प विकसित किये, पहली बार उदासी के स्थान पर अट्टहास और मुस्कराहट के पुष्प विकसित किये।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि मैं तुम्हारा गुरु हूं जीवन में सबसे कठिन कार्य गुरु बनना है, क्योंकि उसे अपने आप को हर क्षण दबोचना पड़ता है, हर क्षण शिष्यों की सन्देहशील नजरों को झेलना पड़ता है, कायर और बुझदिल शिष्यों की कानाफूसियों को सुनना पड़ता है, और उनके ओछे और घटिया स्तर के चिन्तन को अहसास करना पड़ता है।

पर ये सब तो मैंने जीवन में देखे हैं, इन सब को तो मैंने अनुभव किया है, इन सब का अहसास तो मुझे पूरे जीवन भर रहा है, इन तकलीफों से तो मैं कई बार लिपट चुका हूं, और यह बात सत्य है, कि जब जीवन में शत्रु बढ़ते हैं, जब जीवन में आलोचकों की संख्या बढ़ती है, तो यह समझ लेना चाहिए, कि उस व्यक्तित्व में धार आई है, इसके शब्दों में पैनापन आया है यह लोग और भाव को ऊपर ही ऊपर सहेज नहीं रहा है, अपितु चीर फाड़ कर मवाद को बाहर निकालने का प्रयास कर रहा है।

और मैं आप लोगों के बीच सजग, सजग व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित हूं, क्योंकि तुम जिस मुर्दा शरीर को अपने कन्धों पर ढोते हुए चलते हो, मुझे तुम्हारे कन्धों पर से उस लाश को नीचे उतारना है, तुम्हारे चेहरे पर जो परेशानियों की लकीरें हैं उसे मिटाना है, तुम्हारी आंखों में उदासी का जो अन्धकार घिर गया है उसे हटाना है, और तुम्हारे जीवन में बुझदिली का जो भाव आ गया है, उसे समाप्त करना है।

क्योंकि तुम सही अर्थों में शेर हो, और तुम लोगों ने व्याघ्र कुल में जन्म लिया है, परन्तु अफसोस इस बात का है, कि मेरे आने से पहले तुम भेड़ों के बीच खड़े थे भेड़ों की तरह ही तुमने जीवन जीना सीख लिया था, नीची गर्दन झुकाये अपमान का घूंट पीते हुए चलना ही तुम्हारी नियति बन गई थी, और मैं तुम्हारे बीच तुम्हारे कुल का तुम्हें स्मरण कराने आया हूं, तुम्हारी उपस्थिति का तुम्हें बोध कराने आया हूं, यह बताने आया हूं कि तुम मेरे शिष्य हो, और सही अर्थों में व्याघ्र हो, जो उछल कर भारी भरकम गजराज पर झपट्टा मार सकता हो, और उसकी पीठ को लहुलुहान कर सकता हो, तुम्हारे सीने में मेरे प्राण उपस्थित हो रहे हैं, और तुम्हारी हुंकार से सारा वन प्रान्तर गूंज सकता है, तुम्हारे चेहरे पर ओज और तुम्हारी आंखों में चमक है, जिसकी लपटों से आलोचक थर्रा सकते हैं और मेरा यह उद्देश्य है, कि मैं तुम्हें, तुम्हारी उपस्थिति का भान करा सकूं, मैं तुम्हें तुम्हारे व्यक्तित्व से परिचित करा सकूं।

उन सन्यासी शिष्यों ने मेरे आनंद का अमृत चखा है, और इसीलिए वे मेरी उपस्थिति के बिना भी मस्त हैं, चैतन्य हैं, नृत्य युक्त हैं, और मैं तुम्हें वही अमृत बांटने आया हूं। तुम इस अमृत को तृप्ति के साथ चखो और तुम्हें अहसास होगा कि तुम्हारा जीवन संवर गया है, तुम्हारा जीवन जगमगाहट देने लगा है।

पिछले जीवन में तुम्हीं तो थे, जो मुझसे अलग हुए थे, मैं आवाज दे रहा था, और तुम नकली स्वप्नों के पीछे पीठ मोड़ कर भाग रहे थे, और तुमने अपने कान मेरी आवाज सुनने के लिए बन्द कर दिये थे, और उसी का परिणाम तुम्हारी ये चिन्ताएं हैं, ये परेशानियां हैं, ये जीवन की बाधाएं हैं।

तुम्हें जीवन में कुछ भी विचार करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि मैं प्रतिक्षण प्रतिपल तुम्हारे साथ हूं, मुझे मालूम है, कि तुम्हें किस लक्ष्य तक पहुंचाना है, तुम्हें तो चुपचाप अपना हाथ मुझे सौंप देना है, आगे का कार्य तो मेरा है।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि अब इतिहास करवट बदल रहा है, अब तुम्हारी अलसाई हुई आंखों में चेतना का भाव जाग्रत होने लगा है, अपने परिवार और समाज से तन कर कुछ कहने की हिम्मत तुममें आ सकी है, क्योंकि मैं तुम्हें विद्रोह का पाठ पढ़ाने आया हूं, क्योंकि मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं कि इस सड़ी गली पारिवारिक व्यवस्था पर प्रहार कर सको, मैं तुम्हें अन्धकार से लड़ने की क्षमता देने आया हूं, मैं तुम्हें बताने आया हूं कि जीवन को जीने का एक सलीका है, एक तृप्ति है, एक आनन्द है।

और यह तुम्हारा जीवन तुम्हारी सम्पत्ति नहीं है, अपितु यह मेरे प्राणों की धड़कन है, तुम्हारे शरीर में जो ऊपर उठने का भाव है, वह मेरी दी हुई चेतना है, तुम्हारे अन्दर जो आगे बढ़ कर मुझमें समा जाने की प्रक्रिया है, वह मेरा आह्वान है, पर इस आह्वान को, इस निमंत्रण को अस्वीकार कर तुम स्वयं घाटे में रहोगे, तुम्हारे ठिठकने से तुम्हारा ही जीवन सामान्य बन कर रह जायेगा। अब और ज्यादा देरी उचित नहीं, पहले ही बहुत अधिक विलम्ब हो चुका है, अब तो वह समय आ गया है, कि तुम यह अहसास कर सको, कि तुम में एक चेतना है, एक तड़प है, एक आग है, जो इस युग को नेतृत्व दे सकता है, जो आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दर्शन दे सकता है, जो पूरी तरह से गुरु के प्रति समर्पित हो सकता है, और वह समर्पण आने वाले इतिहास की इबारतें होंगी, आने वाला इतिहास तुम पर गर्व कर सकेगा, कि तुमने एक प्रखर व्यक्तित्व को अपनी बांहों में समेटा था, आने वाला इतिहास आश्चर्य चकित होकर देख सकेगा कि तुमने अपने हाथों में पूरे समुद्र को उठाया था, और आने वाले युग में, आने वाले समय में तुम गर्व से कह सकोगे कि तुम निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य रहे हो।

अब तुम्हें ठिठकना नहीं है, रुकना नहीं है, पारिवारिक जिम्मेदारियों के बोझ के तले अपने व्यक्तित्व को मटियामेट नहीं करना है, चिन्ताओं के बोझ के तले अब तुम्हें सिसकना नहीं है, अपितु तेजी के साथ अपने व्याघ्र होने का परिचय देना है, तुम्हें बता देना है, कि तुम तेजस्वी व्यक्तित्व के शिष्य हो, उसकी चैतन्यता हो, उसकी धड़कन हो और तुम में परिवार को तोड़ कर खड़े होने की ताकत है, समर्पित होने की क्षमता है, और यह समर्पण अपने आप तुम्हें सिद्धियां प्रदान कर देगा, क्योंकि समर्पण ही सिद्धि है, अपने आप को विसर्जित कर देना ही जीवन की पूर्णता है, अपने आपको गुरु के प्राणों में समाहित कर देना ही समस्त देवताओं की साधना है, उनके दर्शन हैं, उनकी उपस्थिति है।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि आज से तुम्हारे प्रत्येक क्षण का हिसाब होना चाहिए, जिससे कि तुम समर्पित हो सको, गुरु की बांहों में समा सको उनके हृदय में गहराई के साथ उतर सको, और पूर्णता प्राप्त कर सको। तुम मुझे श्रद्धा और समर्पण दो, मैं तुम्हें पूर्णता दे रहा हूं।

तुम्हें साधना के और सिद्धियों के मोती नहीं मिल रहे हैं, तो यह कसूर तो तुम्हारा ही है, क्योंकि तुम्हें समुद्र में गहराई के साथ उतरने की क्रिया नहीं आई, तुम में पूर्ण रूप से डूबने का भाव नहीं आया, गुरु के हृदय सागर में निश्चिन्त हो कर डुबकी लगाने की क्षमता नहीं आई, और जिस दिन तुम गहराई के साथ गुरु के हृदय में डूब सकोगे, तब वापिस बाहर आते समय तुम्हारी दोनों हथेलियां "सिद्धि" के मोतियों से भरी होंगी।

★

शिष्य का तात्पर्य नजदीक आना है, और ज्यादा नजदीक, इतना नजदीक, कि गुरु के प्राणों में समा जाय, एकाकार हो जाय, गुरु की धड़कनों में अपनी धड़कनें मिला ले, और जब ऐसा होगा तो तुम्हारे अन्दर स्वतः गुरुत्व प्रारम्भ हो जायेगा स्वतः दिव्यत्व प्रारम्भ हो जायेगा, और स्वतः सिद्धियां तुम्हारे सामने नृत्य करती सी प्रतीत होंगी।

जिन्दगी मुस्कराने लगती है

सर्व सिद्धि साधना प्रयोग

से

(१८-५-९०)

जीवन में कुछ दिन ऐसे होते हैं, जिनका यदि उपयोग कर लिया जाय, तो पूरा जीवन जगमगाहट से भर जाता है। काल का तात्पर्य यह है, कि हम समय को पहिचानना सीखें, यदि ठीक समय पर ठीक काम किया जाय तो निश्चय ही उसका शुभ फल प्राप्त होता ही है, एक अंग्रेजी लेखक ने कहा है, कि समय एक ऐसा पुरुष है, जो सिर के पीछे आधे भाग में गंजा है, और आगे के आधे भाग में लम्बे लम्बे बाल हैं, यदि समय आते ही हम उसे पकड़ लेते हैं, तो वह पूरी तरह से वश में हो जाता है, परन्तु वह समय यदि पास में से होकर निकल जाता है, तो फिर उसे पकड़ना संभव नहीं होता।

साधना के क्षेत्र में भी यही बात है, यदि साधना दिवस को ध्यान में रख कर वह साधना सम्पन्न करें, तो निश्चय ही अनुकूल फल प्राप्त हो जाते हैं, और हमारे जीवन की सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। इसके अलावा अन्य दिनों में भी साधना सम्पन्न करने पर अनुकूल फल तो प्राप्त होता ही है, परन्तु समय की या उससे सम्बन्धित दिवस की महत्ता अपने आप में सर्वतम है।

साधना से ही जीवन में जगमगाहट

यदि सही रूप से देखा जाय तो हमारा अब तक का बीता हुआ जीवन परेशानियों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से भरा हुआ है, हमें जीवन में जो कुछ सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। हम जीवन में जो कुछ आनन्द लेना चाहते थे, वह नहीं ले पाये, और हम पद के लिए, धन के लिए और प्रभुता के लिए बराबर परेशान होते रहे, भटकते रहे, जरूरत से ज्यादा परिश्रम करते रहे, परन्तु हमें जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया।

इसका कारण यह है, कि व्यक्ति उन्नति तभी कर सकता है, जब उसके पास दैवी शक्ति हो, दैवी शक्ति की सहायता से ही व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकता है, महाभारत काल में भी जब अर्जुन को युद्ध में विजय प्राप्त करने की इच्छा हुई तो भगवान श्री कृष्ण ने उसे यही सलाह दी, कि बिना दिव्य अस्त्रों के युद्ध में विजय प्राप्त करना असंभव है इसलिए यह जरूरी है, कि पहले तुम भगवान शिव और इन्द्र की आराधना करो, उनसे दैविक अस्त्र प्राप्त करो और ऐसा होने पर ही तुम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हो ।

और हम भी तो जीवन के इस युद्ध में लड़ तो रहे है परन्तु जिस प्रकार से विजय प्राप्त होनी चाहिए, उस प्रकार से विजय या सफलता नहीं मिल रही है, क्योंकि यह जीवन का युद्ध केवल हम अपने बाहु बल से ही लड़ रहे है, जबकि हमारे पास दैविक शक्ति होनी चाहिए, यदि हम दैविक शक्ति को प्राप्त कर लेते है तो निश्चय ही जीवन में सफलता पा जाना सरल, ज्यादा अनुकूल और ज्यादा सुविधाजनक हो जाता है, और ऐसा करने पर ही सम्पूर्ण जीवन में जगमगाहट प्राप्त हो सकती है ।

साधना तो कोई भी कर सकता है

विविध शास्त्रों में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि साधना के लिए ज्यादा पढ़ा लिखा होना आवश्यक नहीं है, उसके लिए यह भी जरूरी नहीं है कि वह संस्कृत का भली प्रकार से उच्चारण करना जानता हो, लम्बे चौड़े विधि विधान या पूजा पाठ की भी आवश्यकता नहीं है ।

साधना की पूर्ण सफलता के लिए तो यह जरूरी है, कि साधक मन में यह दृढ़ निश्चय कर ले, कि मुझे अपने जीवन को संवारना है, मुझे अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करनी है, और मैं समाज में तथा देश में उन्नति के शिखर पर पहुँच कर पूर्णता प्राप्त करके ही रहूंगा ।

इसके साथ ही साथ जिस प्रकार से प्रयोग या विधि बताई गई है, उस प्रकार से यदि वह प्रयोग सम्पन्न करता है तो निश्चय ही उसे अनुकूलता प्राप्त होती है, निश्चय ही उसे जीवन में सिद्धि प्राप्त होती है और वह इस प्रकार कर के जीवन के दुःख दैन्य बाधाएं, और परेशानियों को दूर करने में सफल हो पाता है, तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य होता है जो उसके जीवन का उद्देश्य होता है ।

साधना सामग्री की अनिवार्यता

देव्योपनिषद में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि साधना और सिद्धि के लिए व्यक्ति की जरूरत होती है, तो साथ ही साथ साधना सामग्री की भी नितान्त आवश्यकता होती है, क्योंकि बिना साधना सामग्री के साधना में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती ।

जिस प्रकार बिना अच्छे किस्म के हथियारों के युद्ध में विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, ठीक उसी प्रकार से श्रेष्ठ मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री के बिना साधना में भी सिद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती । पूर्ण सफलता के लिए यह आवश्यक है, कि हम जो साधना सम्पन्न कर रहे है, वह प्रामाणिक हो, और उसमें जो सामग्री बताई गई है, वह उत्तम कोटि की हो, सही हो, मंत्र सिद्ध हो, और उस साधना के लिए अनुकूल हो, ऐसी सामग्री प्रयोग कर निश्चय ही साधक अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है ।

जब हम उच्चकोटि के देवताओं या देवियों को वश में करना चाहते है, जब हमें लक्ष्मी या काली आदि देवियों को अपने अनुकूल बनाना है, तो वह तभी संभव हो सकता है, जब हमारे पास श्रेष्ठ गुरु हो, प्रामाणिक साधना विधि हो, और श्रेष्ठ साधना सामग्री हो, यों उत्तम कोटि की साधना सामग्री और उस पर विशेष पंडितों से यदि मंत्र साधना या प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग कराया जाता है, तो व्यय आना तो स्वाभाविक है, इतने उच्च कोटि के देवताओं को वश में करने के लिए यदि

थोड़ा बहुत व्यय हो जाता है, तो वह पूरी तरह से लाभ का सौदा है, यह हमारे अनुकूल सौदा है. ऐसा प्रयोग करके यदि हम बहुत कुछ प्राप्त कर लेते हैं, तो फिर जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं रह सकती।

पत्रिका : आपकी उन्नति में सहायक

पत्रिका का यह प्रारम्भ से ही उद्देश्य रहा है, कि सम्पूर्ण शास्त्रों को मथ कर सम्पूर्ण साधनाओं का निचोड़ प्राप्त कर जो सरल विधि हो, जो प्रामाणिक विधि हो, वह पत्रिका पाठकों को दी जाय, उसे जो भी मंत्र, जो भी साधना या जो भी सामग्री दी जाय, वह अपने आप में प्रामाणिक और श्रेष्ठ हो, और यदि साधक उस साधना को सम्पन्न कर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है, तो वह पत्रिका के लिए गौरव की बात होती है. पत्रिका ने ऐसे कई साधक तैयार किये है जिन्होंने अपनी साधनाओं में सफलताएं पाई हैं, अपने जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर हुए हैं, और अपने जीवन की बाधाओं तथा कठिनाइयों को दूर करने में सफलताएं अनुभव की हैं।

जहां पत्रिका के माध्यम से पत्रिका पाठकों और साधकों को साधनाओं के बारे में जानकारी दी जाती है, वहीं साथ ही साथ यहां जोधपुर में साधना शिविरों में उन्हें बुला कर इनसे सम्बन्धित प्रशिक्षण और जानकारी भी दी जाती है. यही नहीं अपितु भारतवर्ष में विविध स्थानों पर साधना शिविर सम्पन्न कर उन्हें प्रामाणिक जानकारी दी जाती है, उनके लिए सफलता का मार्ग प्रशस्त किया जाता है और इससे उन्हें विशेष अनुकूलताएं प्राप्त हुई हैं, इससे साधकों को सफलताएं अनुभव हुई हैं।

सर्व सिद्धि साधना प्रयोग

शास्त्रों ने १८-५-९० अर्थात् ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी को सर्वसिद्धि "साधना दिवस" स्वीकार किया है, सर्व सिद्धि साधना का तात्पर्य एक ऐसा प्रयोग है या एक ऐसी साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर जीवन की जो भी इच्छा होती है, वह पूरी होती है, जीवन की जो भी आवश्यकता होती है, वह पूर्ण होती है और हम जिस उद्देश्य को लेकर यह साधना प्रारम्भ करते है, उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

सर्व सिद्धि दिवस के अवसर पर हम दो प्रकार की धारणाएं मन में रख सकते हैं, एक तो शत्रु नाश, ऋण मुक्ति, दरिद्रता से छुटकारा, बीमारी से मुक्ति आदि चिन्तन या विचार रख कर यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, अथवा आर्थिक उन्नति, व्यापारिक सफलता, जीवन की पूर्णता आदि के लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि इस दिन आप अपने मन में जो धारणा लेकर मंत्र जप करते हैं, तो निश्चय ही उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती ही है, और कई बार तो साधक साधना सम्पन्न करता है, और दूसरे दिन से ही अनुकूलता प्राप्त होने लग जाती है।

वास्तव में ही यह एक अद्वितीय साधना प्रयोग है, यह एक ऐसा प्रयोग है, जिससे हम अपनी किसी भी इच्छा को पूर्णता दे सकते हैं. यह एक दिन का प्रयोग है और इसे सम्पन्न करने पर व्यक्ति के मन में जो इच्छा होती है, वह पूरी हो जाती है।

प्रयोग को प्रारम्भ करने से पूर्व साधक हाथ में जल लेकर यह विचार करे, कि मेरा अमुक कार्य जल्दी से जल्दी पूरा होना चाहिए, और वह जल जमीन पर छोड़ दें, तथा फिर यह मंत्र जप सम्पन्न करें, तो उस कार्य में निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है. साधक चाहे तो एक से ज्यादा इच्छाएं भी हाथ में जल लेकर संकल्प कर सकता है।

साधना सामग्री

इसके लिए बहुत थोड़ी सी साधना सामग्री की आवश्यकता होती है, जो इस साधना में आवश्यक है, वह साधना सामग्री है— १- सर्व सिद्धि महायंत्र,

> **प्रीति**
>
> स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलं ।
> तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ।।
>
> मनुस्मृति ३/६०/६२
>
> यदि घर में परिवार की स्त्रियां प्रसन्न और सन्तुष्ट रहती हैं, तो उस परिवार की निरन्तर उन्नति होती रहती है । परिवार की सफलता का आधार पति पत्नी का परस्पर प्रेम और समान रुचि है ।

२- सियार सिंगी, ३- मधुरूपेण रुद्राक्ष ।

इसके अलावा जलपात्र, कुंकुम, दूध का बना हुआ प्रसाद, चावल, आदि पहले से ही मंगवा कर पूजा स्थान में रख दें ।

यह प्रयोग प्रात अपने पूजा स्थान में कर सकते हैं या घर के किसी एकान्त कमरे में भी यह प्रयोग सम्पन्न कर कर सकते हैं । साधना प्रारम्भ करने से पूर्व साधक पीले वस्त्र का आसन बिछा दें, साधक स्वयं पीली धोती धारण करे, और कन्धे पर भी पीली धोती हो, सामने तथा सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती लगा दे ।

इसके बाद किसी थाली में कुंकुम की सात बिन्दियां लगावें और उस पर सर्व सिद्धि महायंत्र स्थापित कर दें । इस यंत्र के एक तरफ मधुरूपेण रुद्राक्ष रख दें, और दूसरी ओर सियार सिंगी को स्थापित कर दें ।

इसमें हकीक माला का प्रयोग किया जाता है, पर इस बात का ध्यान रहे, कि उस हकीक माला का प्रयोग पहले किसी अन्य साधना में नहीं किया गया हो, तथा वह सर्व सिद्धि मंत्र से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त हो, ऐसी माला ही इस साधना के लिए आवश्यक है ।

इसके बाद सर्व सिद्धि महायन्त्र पर कुंकुम से सात बिन्दियां लगावें, और खुद के ललाट पर भी तिलक करें, फिर पास में ही गुरु चित्र को स्थापित कर दें, और पहले गुरु की पूजा करें, उनको पुष्प समर्पित करें, तथा पुष्पहार पहिनावें ।

इसके बाद उस माला की पूजा करें, और प्रार्थना करें, कि मैं अमुक कार्यों की सफलता के लिए यह मन्त्र जाप कर रहा हूं, इसीलिए मुझे जल्दी से जल्दी सफलता प्राप्त हो ।

इसके बाद साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर उस माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें केवल ग्यारह माला मन्त्र जप आवश्यक है ।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब साधक मधुरूपेण रुद्राक्ष, सियार सिंगी तथा इस माला को किसी मन्दिर में चढ़ा दें, अथवा नदी तालाब या समुद्र में विसर्जित कर दें, तथा सर्वसिद्धि महायन्त्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें ।

इस साधना से सम्बन्धित सर्व सिद्धि महामन्त्र निम्न है—

ॐ हिलि हिलि चिलि चिलि सिद्धि किरि किरि फट्

यह मन्त्र गोपनीय और महत्वपूर्ण है, यद्यपि यह साबर मन्त्र है, जिसे कोई भी व्यक्ति पढ़ सकता है, या उच्चारण कर सकता है, पर इसका प्रभाव अचूक होता है, मन्त्र जप से पहले साधक इस सर्व सिद्धि महायन्त्र के सामने पुष्प चढ़ा सकता है, पुष्प माला पहिना सकता है, कुंकुम अक्षत समर्पित कर सकता है, तथा दूध का बना हुआ प्रसाद रख सकता है ।

यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, और यह केवल एक दिन की ही साधना है, इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या वृद्ध कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना को सम्पन्न करने पर किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है, और इस एक दिन की साधना से ही सम्पूर्ण जीवन में जगमगाहट आ सकती है , प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह अवश्य ही इस वर्ष इस साधना को सम्पन्न करें ।

मोहिनी एकादशीः ५-५-९०

अपने सारे व्यक्तित्व को प्रभाव पूर्ण बनाइये

सम्मोहन साधना के द्वारा

जीवन में उन्नति का प्रमुख आधार आपका व्यक्तित्व होता है, आपके पास कितनी धन दौलत है, आपका कितना प्रभुत्व है, यह सब अलग बात है, मूल बात तो यह है, कि आप जब किसी दूसरे से मिलते हैं तब आपका व्यक्तित्व सामने वाले पर कितना हावी होता है, और आपका व्यक्तित्व कितना बलवान है, आपको देखते ही यदि सामने वाला निस्तेज हो जाता है, या दूसरे शब्दों में आपका व्यक्तित्व उस पर हावी हो जाता है, तभी आप अपने व्यक्तित्व की पूर्णता समझें।

आज के युग में हमें नित्य सैकड़ों लोगों से मिलना पड़ता है, जिसमें पुरुष होते हैं, स्त्रियां होती हैं, अधिकारी होते हैं, व्यापारी होते हैं, और भी कई तरह के लोग होते हैं उन सब पर अपना प्रभाव जमाने के लिए यह जरूरी है, कि हमारे व्यक्तित्व में कोई विशेष बात हो, हमारे चेहरे में कोई चुम्बकीय आकर्षण हो, जिसकी वजह से सामने वाला देखते ही प्रभावित हो जाय, और हम उसे जो भी बात कहें, उसका सीधा असर हो, और वह हमारी बात मान ले।

यदि ऐसा होता है, तो हमारे जीवन के कई कार्य आसानी से सम्पन्न हो जाते हैं, हम जीवन के कई क्षेत्रों में सफलता पा लेते हैं, हमें अपने जीवन में जिस लक्ष्य तक पहुंचना होता है, जल्दी से और आसानी से वहां तक पहुंच जाते हैं पर यह सब तभी हो सकता है, जबकि आपका व्यक्तित्व चुम्बकीय और सम्मोहन युक्त हो।

पर यदि ऐसा नहीं है, आपका शरीर कमजोर है, यदि आप बात करते हुए या अधिकारियों से मिलते हुए घबराते हैं, यदि आप अपने आपको हीन महसूस करते हैं, तो आप जीवन में सफल नहीं हो सकते, यदि आपके चेहरे पर ओज या प्रभाव नहीं है, यदि आप अपने व्यक्तित्व से सामने वाले पर हावी नहीं सकते, तो आप जीवन में पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर सकते, पर यह सब कुछ प्राप्त हो सकता है, सम्मोहन साधना के द्वारा।

यदि आप पुरुष हैं तो

आपको तो अपने जीवन में नित्य कई लोगों से मिलना जुलना पड़ता है उनसे बातचीत करनी पड़ती है, फिर भले ही वह व्यापारी हो, आपका नौकर हो आपका पुत्र या पिता हो, पत्नी या रिश्तेदार हो, आपके लिए यह जरूरी होता है कि आपका प्रभाव सामने वाले पर पड़े, वह आपकी बातों से और आपके व्यक्तित्व से प्रभावित हो, और आप उनको जो भी बात कहें, वह पूरी तरह से माने। इसके लिए यह सम्मोहन साधना आपके लिए जरूरी है, जिससे कि आपके चेहरे पर निखार आ सके, और सामने वाले व्यक्तित्व पर हावी होने की क्रिया प्राप्त हो सके।

ऐसा होने पर आप अपने जीवन में ज्यादा सफल हो सकेंगे, और अपने जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, वह जल्दी प्राप्त कर सकेंगे।

यदि आप स्त्री हैं तो

चाहे आप कुमारी हों, विवाहिता हों, सामाजिक कार्य करने वाली हों, सब जगह आपके व्यक्तित्व का प्रभाव सामने वाले पुरुषों पर पड़ना आवश्यक है।

और यदि ऐसा नहीं होता है, तो आपको पग पग पर अपमानित होना पड़ता है, अपने आपको दबोचना पड़ता है, और जीवन में जो प्रसन्नता, जो खुशियां और जो आनन्द आपको प्राप्त होना चाहिए, वह प्राप्त नहीं हो पाता।

जब आप देखती हैं, कि आपके पति आपका कहना नहीं मानते, आपके पुत्र आपकी बात स्वीकार नहीं करते, आफिस में आपकी उपेक्षा होती है, समाज में आपको जो सम्मान मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पाता, तो धीरे धीरे आप कुण्ठाग्रस्त हो जाती हैं, एक प्रकार की हीन भावना आपके मन में घर कर जाती है, जिससे आपके चेहरे का रहा सहा आकर्षण भी समाप्त हो जाता है।

साधक की भावना

मुझे जो तेरे आगे, वो सर मांगता हूं।
तुझे देखने को, नजर मांगता हूं॥
मुझे चाहिए बस, तेरी बन्दा नवाजी।
न घर मांगता हूं, न जर मांगता हूं॥
न हो जाऊं बेसुध, मैं जलवों से तेरे।
इलाही मैं ऐसी, नजर मांगता हूं॥
मरीजे मुहब्बत हूं, ऐ शाहे खुबां।
मैं दवा-ए-दर्द-जिगर मांगता हूं॥
मुझे चाहिए कुछ नहीं और "बिस्मिल"।
मैं आहों में अपनी असर मांगता हूं॥

इसलिए आपको अपने व्यक्तित्व की पूर्णता के लिए समाज में श्रेष्ठता और सम्मान प्राप्त करने के लिए परिवार में प्रभुत्व बनाये रखने के लिए यह जरूरी है, कि आपके व्यक्तित्व में सम्मोहन अवस्था प्राप्त हो, जिससे आप पुरुषों के दिलों पर शासन कर सकें, और अपने जीवन में जो कुछ चाहती हैं, वह प्राप्त हो सके।

मोहिनी-साधना

जब देवताओं और दैत्यों में युद्ध हुआ, और समुद्र मंथन के बाद अमृत कलश निकला तो उसे पाने के लिए देवताओं और दैत्यों में भयानक युद्ध छिड़ गया, ऐसी स्थिति में भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर उन क्रूर दैत्यों को अपने व्यक्तित्व से पूर्ण प्रभावित कर दिया, और उनके सामने ही वह अमृत कलश देवताओं को सौंप दिया, यह घटना जिस दिन घटी उसे मोहिनी एकादशी के नाम से जाना जाता है, जो कि इस बार ५-५-९० को सम्पन्न हो रही है, इसीलिए उच्चकोटि के साधक इस दिन को ही सम्मोहन साधना सम्पन्न करते हैं, जिससे कि वह अपने जीवन में अपने व्यक्तित्व को पूर्णता दे सकें।

सम्मोहन साधना

इसको शास्त्र में मोहिनी साधना सम्मोहन साधना या वशीकरण साधना भी कहा गया है, अर्थात् यह एक ऐसी साधना है, जिसको सम्पन्न करने पर व्यक्ति के चेहरे पूरे शरीर और उसकी वाणी में कुछ ऐसी चमक कुछ ऐसा ओज और कुछ ऐसा प्रभाव पैदा हो जाता है जिसकी वजह से वह अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति को भी अपने सम्मोहन से प्रभावित कर लेता है, और उसे अपने वश में बना लेता है।

यह एक दिन की साधना है, और सही अर्थों में कहा जाय, तो जीवन की श्रेष्ठ साधना है, आज के युग में तो प्रत्येक साधक के लिए यह एक अनिवार्य साधना है क्योंकि इस साधना को सम्पन्न करने से उसके व्यक्तित्व में निखार आ जाता है और वह अपने जीवन में जो कुछ चाहता है, वह सहज ही प्राप्त कर लेता है, दूसरों से काम निकालने में वह माहिर हो जाता है, और अपनी जिन्दगी में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम हो पाता है।

इस साधना से धीरे धीरे पूरे शरीर का काया कल्प होने लगता है, चेहरे की झुर्रियां मिटने लगती हैं, और आंखों में एक विशेष प्रकार की लपक पैदा हो जाती है जो सामने वाले पर पूरा प्रभाव डालने में समर्थ हो पाती है।

वास्तव में ही इस दिन हजारों हजारों पुरुष और स्त्रियां इस साधना को सम्पन्न कर आगे का पूरा वर्ष अपने लिए अनुकूल और उन्नतिदायक बना लेती हैं, इस साधना को सम्पन्न करने से परिवार के मतभेद दूर हो जाते हैं, अधिकारियों की कृपा प्राप्त हो जाती है, और अपने मित्रों और संबंधियों में उसका प्रभुत्व बढ़ जाता है।

और यदि आपका व्यक्तित्व प्रभावपूर्ण है भी, तो भी इस प्रयोग को करने से उसमें और ज्यादा निखार आता है, सफलता के और नये द्वार खुलने लगते हैं, और जीवन में आप आसानी से उन सफलताओं को प्राप्त कर लेते हैं, जो आपके जीवन में आवश्यक है।



साधना समय

इस साधना को आप मोहिनी एकादशी अर्थात् ५-५-६० को सम्पन्न करें, और यदि इस दिन किसी वजह से यह साधना सम्पन्न न कर सकें, तो किसी भी एकादशी को यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, यह केवल एक दिन का प्रयोग है, और इसे दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना सामग्री

इसके लिए कोई विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, साधक के लिए केवल "मोहिनी महायंत्र" की आवश्यकता होती है जो कि पूर्ण मंत्र सिद्ध प्राणश्चेतना युक्त हो, यह यंत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस पर पूर्ण सम्मोहन प्रयोग किया हुआ होता है, देखा जाय तो यह महायंत्र सौभाग्यशाली व्यक्तियों को ही प्राप्त हो सकता है।

पिछले दिनों उच्च कोटि के योगी स्वामी गिरधरानंद जी पधारे थे, जो कि इस क्षेत्र के अन्यतम विद्वान और जानकार हैं, उन से हमें इस प्रकार के श्रेष्ठ मोहिनी महायन्त्र प्राप्त हुए थे, जो कि साधकों के लिए वरदान स्वरूप है, साधकों को चाहिए, कि वे इस प्रकार का महायन्त्र प्राप्त कर इस दिन साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना प्रयोग

साधक स्नान कर सफेद आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जांय, और सामने एक घृत का दीपक लगा दें, इसके बाद किसी पात्र में इस मोहिनी महायन्त्र को स्थापित कर दें, और "सम्मोहन माला" से मोहिनी मन्त्र का जप करें।

इस साधना में यन्त्र की पूजा आदि की जरूरत नहीं होती, क्योंकि यह महायन्त्र अपने आप में ही सिद्ध किया हुआ होता है, मोहिनी माला अपने आप में एक अद्भुत और अद्वितीय माला है, जिसके धारण करने से पूरे शरीर में धीमा धीमा विद्युत प्रवाह सा होता रहता है, और पूरा शरीर निखर कर सम्मोहक बन जाता है, इसीलिए कई शास्त्रों में और साधना ग्रन्थों में मोहिनी माला को विशेष प्रशंसा की हुई है।

क्षमा याचना

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ति मे सव्व भुएसु, वैरं मज्झन केणई॥

मैं संसार के समस्त जीव मात्र के प्रति क्षमा भाव रखता हूं, सभी जीव मुझे क्षमा करें, मैं प्राणी मात्र के प्रति मित्र भाव रखता हूं क्योंकि मेरा किसी से कोई वैर नहीं है।

मोहिनी महामन्त्र

॥ ॐ ह्रीं सर्वं जनं मे वश्य सम्मोहय सम्मोहय फट्॥

जैसा कि मैं बता चुका हूं, कि मोहिनी माला से ही उपरोक्त मन्त्र की [illegible] माला मन्त्र जप होना चाहिए, मन्त्र करते समय साधक को अपनी दोनों आंखों से एकटक मोहिनी महायन्त्र को देखते रहना चाहिए, जिससे उसकी आंखों में सम्मोहन अवस्था आ जाय, और इस सम्मोहन प्रभाव से वह हजारों लोगों को प्रभावित कर सके।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय, तब वह माला गले में धारण कर लें, और उस मोहिनी महायन्त्र को किसी नदी तालाब, कुएं या मन्दिर में विसर्जित कर दें, इस प्रकार करने पर यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है।

आप स्वयं इस साधना को सम्पन्न कर इसका चमत्कार अनुभव कर सकते है, कि यह प्रयोग अपने आप में कितना प्रभावयुक्त और तेजस्वी है, तथा इससे लोगों की नजरें ही बदल जायेगी, वे स्वयं आपके पास आने, आपसे बातचीत करने के लिए आतुर होंगे, और आपकी प्रत्येक आज्ञा को पूरा करने में प्रसन्नता महसूस करेंगे।

प्रेम, विवाह, सामाजिक सम्बन्ध, व्यवसायिक सम्बन्ध आदि सभी क्षेत्रों में यह प्रयोग चमत्कारिक है, और आपके पूरे जीवन को जगमगाहट देने में समर्थ है। ★

धूमावर्त

जीवन
होना होत
इसीलिए
अपने और
मिल जा
परिणाम

पर
देखते हैं,
कम सफ
मेहनत
लाभ ही
तरफ से
परन्तु
सुख
पाता।

धूमावती जयन्ती : २१-५-९०

तांत्रोक्त प्रभाव

कितना खतरनाक होता है

जीवन का मतलब सुख और शान्ति के साथ समय व्यतीत होना होता है, हम अपने जीवन में प्रयत्न और परिश्रम इसीलिए तो करते हैं, कि हमारा जीवन सुखमय हो. हम अपने जीवन में जितना परिश्रम करें, उतना फल हमें मिल जाय, हम अपने जीवन में जो कुछ करें उसका परिणाम प्राप्त हो जाय।

पर अधिकतर ऐसा नहीं होता, हम अपने जीवन में देखते हैं, कि बहुत अधिक परिश्रम करने के बाद बहुत कम सफलता हमें मिल पाती है। व्यापार में हम दिन रात मेहनत करते रहते हैं, और समय आने पर उसका जो लाभ होना चाहिए, वह लाभ नहीं हो पाता। हम अपनी तरफ से परिवार में कोई कलह या मन मुटाव नहीं चाहते, परन्तु फिर भी प्रयत्न करने के बावजूद भी परिवार में जो सुख शान्ति और आनन्द होना चाहिए वह नहीं हो पाता।

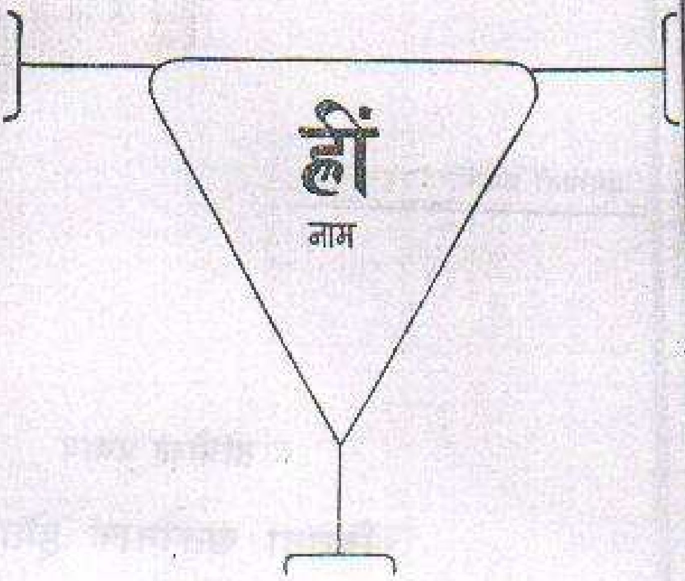
तब दिमाग में यह प्रश्न उठता है, कि ऐसा क्या कारण है, कि जब थोड़ा सा परिश्रम करने पर भी लोग पूरा पूरा लाभ उठा लेते हैं, और हमें लाभ नहीं मिल पाता, थोड़ी सी मेहनत करने पर भी दूसरे व्यक्ति व्यापार में लक्ष्मी प्राप्त करके आराम की जिन्दगी व्यतीत करने में सफल हो जाते हैं, और हम नहीं कर पाते, जरूर इसके पीछे कोई न कोई रहस्य है, कोई न कोई कारण है, जिसे हम भली प्रकार से समझ नहीं पा रहे हैं।

तान्त्रिक प्रयोग–मुख्य कारण

जब जीवन में ऐसी स्थिति अनुभव हो, तो यह निश्चित है, कि किसी ने कोई टोना टोटका या तांत्रिक प्रयोग कर दिया है, जिससे जीवन में जो अनुकूलता और सुख प्राप्त होना चाहिए, वह नहीं हो पाता

यद्यपि तांत्रिक प्रयोग सरल नहीं है, परन्तु मैंने अनुभव किया है, कि आजकल छोटे मोटे दुच्चे किस्म के कई तांत्रिक बन गये हैं, जो किसी को बचाना तो नहीं जानते, परन्तु उसे तकलीफ दे सकते हैं, जो किसी का हित तो नहीं कर पाते, पर उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं।

कुछ विशेष वर्ग के लोगों ने इस प्रकार के छोटे मोटे तांत्रिक प्रयोग सीख लिये हैं और वे दूसरों के द्वारा पैसा मिलने पर इस प्रकार का प्रयोग कर लेते हैं और इसकी वजह से उनकी भरी पूरी गृहस्थी बरबाद होकर रह जाती है।



शत्रु मारण यन्त्र

यह तो वैसी ही बात हुई कि किसी स्वस्थ व्यक्ति को चाकू मारने में कोई विशेष हुनर या ज्ञान की जरूरत नहीं होती, कहीं से भी उसके हाथ एक छोटा सा चाकू लग जाता है और वे बिना परिणाम जाने किसी के पेट में चाकू का घाव लगा देते हैं, परन्तु उस घाव को दूर करने में और कटे हुए स्थान की चिकित्सा करने में विशेष ज्ञान, विशेष अनुभव और विशेष औषधि की जरूरत होती है। बिना कुशल डाक्टर के वह घाव सड़ सकता है, नुकसान हो सकता है और कभी कभी उससे मृत्यु भी हो सकती है।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि चाकू लगाने में केवल एक सेकेण्ड का समय लगता है, परन्तु चाकू लगने से जो घाव होता है, उसको ठीक करने में पूरा एक महीना लग सकता है। चाकू लगाने में केवल दो रुपये या चाकू खरीदने में खर्च होते हैं, परन्तु उससे जो घाव बन जाता है, उस घाव को ठीक करने में सैकड़ों रुपये लग जाते हैं।

ठीक यही बात तांत्रिक प्रभाव की है, तांत्रिक प्रयोग तो कोई टुच्चा सा व्यक्ति भी कर सकता है, परन्तु उसके परिणाम व्यक्ति को गहराई के साथ भोगने पड़ते हैं, और एक प्रकार से देखा जाय तो पूरी जिन्दगी अस्त व्यस्त हो जाती है। हमला करने या तांत्रिक प्रयोग करने की विद्या सीखने में बहुत ज्यादा साधना की जरूरत नहीं होती, परन्तु तांत्रिक प्रयोग यदि हो गया है तो उसे दूर करने के लिए कठिन साधना, सिद्धि या अनुभवी व्यक्ति की जरूरत होती है।

तांत्रिक प्रयोग से संभावित परिणाम

जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं होती हैं, जिनमें हम यह आसानी से पता लगा सकते हैं, कि हम पर तांत्रिक

प्रयोग हुआ है या नहीं , यद्यपि दूसरे भी कारण हो सकते है, परन्तु आज के युग में इस प्रकार के छोटे मोटे कई तांत्रिक है जो उसके विरोधी से धनराशि लेकर तांत्रिक प्रयोग कर डालते है, और उसके परिणाम से परेशानियां पैदा हो जाती है ।

नीचे कुछ विशेष तथ्य है, जिनके माध्यम से हम जान सकते है, कि तांत्रिक प्रयोग है या नहीं, आप स्वयं अपने बारे में जांच कर सकते है ।

१- यदि स्वयं थोड़ा बहुत बीमार रहें, तबियत ठीक रहे ही नहीं, और इलाज कराने पर भी उसका परिणाम प्रतीत न हो तो समझ लेना चाहिए, कि आप पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है ।

ॐ गं गणपति प्रहितं

हुं गं नाम

हुं गं धं स्वां ग हा

शत्रूच्चाटन यन्त्र

२- यदि आप हर समय चिन्ता ग्रस्त रहते है, या बार बार आत्म हत्या करने की भावना मन में आती है या घर बार छोड़ कर कहीं दूर चले जाने के विचार मन में आते है तो समझना चाहिए कि जरूर किसी ने आप पर तांत्रिक प्रयोग करवाया है।

३- यदि परिवार में कोई न कोई बीमार बना ही रहता है और दवाइयों तथा डाक्टरों पर खर्चा होने के बावजूद भी बीमारी का पता नहीं चल रहा हो, या घर से बीमारी समाप्त हो ही नहीं रही हो, या घर में डाक्टर का आना जाना बना ही रहे, तो तो निश्चय ही तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए ।

४- यदि पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह रहा हो, या मोटापा बढ़ रहा हो, अथवा जरूरत से ज्यादा कमजोरी आ रही हो, या उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि उस पर तांत्रिक प्रयोग हुआ है ।

५- यदि विवाह के कुछ वर्ष बीतने पर भी संतान नहीं हो रही हो, और डाक्टरों को बताने पर भी यदि यह रिपोर्ट आ रही हो कि स्वास्थ्य की दृष्टि से और संतान पैदा करने की दृष्टि से कोई कमी नहीं है, फिर भी संतान नहीं हो रही हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि किसी ने गर्भ बांध दिया है ।

६- इसी प्रकार यदि संतान पैदा हो कर मर जाती है या बीच में ही गर्भ गिर जाता हो, तो निश्चय ही "गर्भ बंधन तांत्रिक प्रयोग" किया गया है, ऐसा समझना चाहिए ।

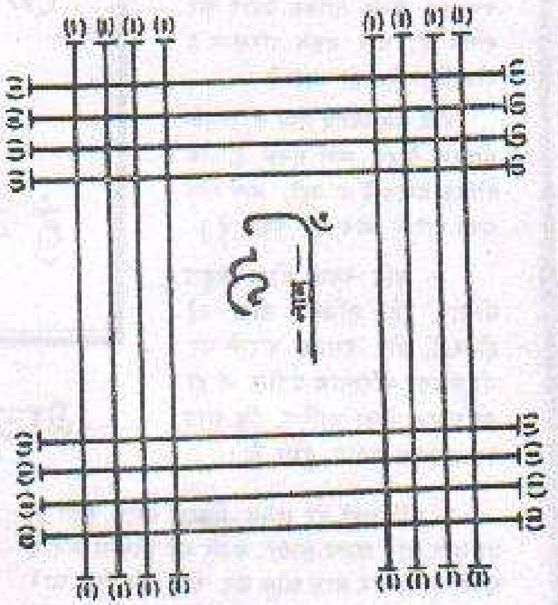
७- यदि घर में जवान पुत्र या पुत्री अथवा घर के किसी सदस्य की अचानक मृत्यु हो जाय, तो निश्चित रूप से यह समझ लेना चाहिए कि किसी ने घर के सदस्य पर "मूठ" का प्रयोग किया है, या मृत्यु का प्रयोग किया है ।

८- यदि आपने मकान बनाया हो, और उसके बाद बराबर कोई न कोई विपत्ति या परेशानी आती जाय तो समझ लेना चाहिए कि इसका कारण तांत्रिक प्रयोग ही है।

९- यदि आप चाहें कितना ही कमायें पर घर में धन संचय न हो, और यह पता ही नहीं चले कि जो पैसा आता है वह कहां चला जाता है, और हर समय अभाव ही अभाव बना रहता है, तो यह समझ लेना चाहिए कि किसी ने तांत्रिक प्रयोग निश्चित रूप से किया है।

१०- यदि आप बराबर कमजोरी अनुभव करते हैं और आपका मनोबल समाप्त हो गया हो, जीवन को जीने का उत्साह खत्म हो गया हो, उन्नति की इच्छा ही मर गई हो तो यह तांत्रिक प्रयोग का परिणाम है, ऐसा समझना चाहिए।

शत्रु स्तंभन यंत्र



११- यदि भाई-भाई में अकारण शत्रुता बढ़ गई हो और प्रयत्न करने पर भी समझौता नहीं हो रहा हो अथवा एक दूसरे के प्रति व्यर्थ के मतभेद बढ़ते जा रहे हों तो यह तांत्रिक प्रयोग का ही प्रभाव है, ऐसा मेरा अनुभव है।

१२- यदि जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा पार करने के बावजूद भी आप का मकान नहीं बन रहा हो, या आपकी जमीन नहीं बिक रही हो या कोई नई जमीन नहीं खरीद पा रहे हों या मकान अधूरा रह रहा हो, तो निश्चय ही यह गृह बन्धन प्रयोग है जिसकी वजह से यह परेशानी आपको उठानी पड़ रही है।

१३- यदि आपने व्यापार की दृष्टि से जमीन खरीदी हो या मकान बनाये हों, और जमीन नहीं बिक रही हो या उसमें कानूनी परेशानियां आ रही हों तो निश्चय ही यह तांत्रिक प्रयोग है, ऐसा समझ लेना चाहिए।

१४- यदि संतान बीमार रहती हो, इलाज कराने पर भी उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं हो रहा, या वह ठीक ढंग से पढ़ाई नहीं कर रहा हो अथवा उसका मानसिक विकास भली प्रकार से नहीं हो रहा हो, तो इसका कारण केवल मात्र तांत्रिक प्रयोग ही है।

१५- यदि आपके जीवन में अकारण शत्रु बनते जा रहे हों, आप जिसकी भी भलाई करें, वही शत्रु बन जाय या आपको हानि पहुंचाने की कोशिश करे तो इसका सीधा सादा तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है।

१६-यदि हर समय शत्रु भय बना रहता हो, यदि निरन्तर आपके विरुद्ध कुचक्र रचे जाते हों और जिससे आपकी मानसिक शान्ति समाप्त हो गई हो, और हर समय आप तनाव में रहते हों तो इसका तात्पर्य तांत्रिक प्रयोग ही है, और उसी वजह से आप इतनी परेशानी उठा रहे हैं।

व्यवसाय में लाभ हेतु

१	६	१०
१४	७ हैं २ श्री ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८	९
५	११	४

१७- यदि पति पत्नी में मतभेद हो, आपके समझाने पर भी पत्नी सही रास्ते पर नहीं चल रही हो या हर समय घर में कलह का वातावरण हो, तो यह गृह बंधन प्रयोग है, और तांत्रिक प्रयोग की वजह से ही यह समस्या आई है।

१८- यदि प्रयत्न करने के बावजूद भी आपके कार्य सफल नहीं हो रहे हों, जो काम दूसरों के लिए आसानी से हो जाते हैं पर आप आसानी से वह काम नहीं कर पाते है तो तांत्रिक प्रयोग के अलावा और कोई कारण नहीं हो सकता।

१९- यदि जीवन का बहुत बड़ा भाग व्यतीत करने के बावजूद भी आपका भाग्योदय नहीं हो रहा हो और हर क्षण भाग्य में बाधाएं आ रही हों, जो उन्नति होनी चाहिए वह नहीं हो रही हो तो इसका तात्पर्य भाग्यबंधन अथवा भाग्य बाधा तांत्रिक प्रयोग समझना चाहिए, ऐसा मेरा अनुभव है।

२०- यदि राज्य की तरफ से बराबर अड़चनें आती हों, प्रयत्न करने पर भी अधिकारियों से मतभेद दूर नहीं हो रहे हों, आपकी उन्नति या प्रमोशन नहीं हो रहा हो, आप जैसा स्थानान्तरण चाहते हैं, प्रयत्न करने पर भी वैसा नहीं हो रहा हो, [illegible] तांत्रिक प्रयोग ही है।

२१- यदि आय के साधन कमजोर हो गये हों, प्रयत्न और परिश्रम करने के बावजूद भी लक्ष्मी का आगमन नहीं हो रहा हो, ग्राहक नहीं आते हों, लक्ष्मी की वृद्धि नहीं हो रही हो, व्यापार कमजोर पड़ गया हो तो ऐसा तांत्रिक प्रयोग की वजह से ही हो सकता है, यह स्पष्ट है।

ऊपर मैंने कुछ सूत्र दिये हैं, जिनके आधार पर हम जान सकते हैं, कि हम जो परेशानी भुगत रहे हैं, उसका कारण क्या है, हमारे जीवन में जो बाधाएं आ रही हैं उसका कारण क्या है, हम जीवन में जो उन्नति नहीं कर पा रहे हैं, उसका कारण क्या है।

और इसका कारण तांत्रिक प्रभाव ही है, आप तो

बुद्धिमान हैं, चतुर हैं, उसके बावजूद भी आप इन समस्याओं का निराकरण नहीं कर पा रहे हैं, तो इसका मतलब यह है, कि कोई ऐसी शक्ति आप पर या आपके परिवार पर हावी है, जिससे आप छुटकारा नहीं पा रहे हैं, और आपकी सारी होशियारी धरी की धरी रह गई है।

ऐसी स्थिति में क्रोध या गुस्सा व्यर्थ है, ऐसी स्थिति में चालाकी या दूसरे विकल्प खोजना भी व्यर्थ है, या दूसरे कारण ढूंढने तथा अपने मन को झूठी तसल्ली देना भी व्यर्थ है, अपने भाग्य का रोना रोना, अथवा भगवान पर दोष लगाना व्यर्थ है, इसका कारण किसी ने तांत्रिक प्रयोग आप पर करवा दिया है, और उसी वजह से आप इन समस्याओं से घिर गये हैं।



शत्रु मारण यन्त्र

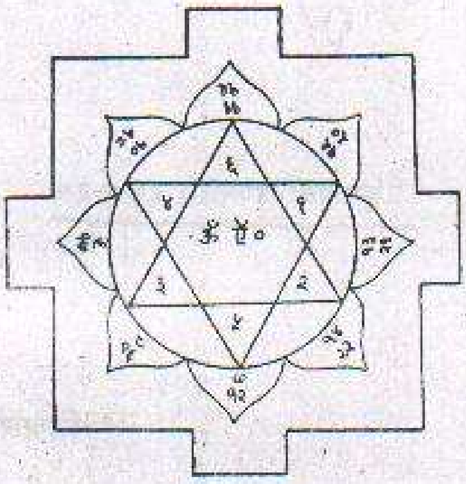
ये तांत्रिक प्रयोग आपके परिवार के किसी रिश्तेदार ने, पार्टनर ने, या किसी अन्य ने आप पर करवा दिये हों, इसके कारण तो कुछ भी हो सकते हैं, कारण ईर्ष्या हो, हो सकती है, जलन हो सकती है, यह प्रवृत्ति हो सकती है, कि आप उन्नति क्यों कर रहे हैं, यह ईर्ष्या हो सकती है, कि आप सुखी क्यों हैं, या आपका व्यापार उन्नति की ओर क्यों बढ़ रहा है, इन कई कारणों से आपके रिश्तेदार या नजदीकी व्यक्ति ईर्ष्यावश हो कर किसी दूसरे तांत्रिक से प्रयोग करवा दिया हो, और आप परेशानियां भुगत रहे हैं।

और जैसा कि मैंने ऊपर बताया, कि आपको युग के अनुसार बदलना चाहिए, नवीन परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए, आज जो प्रहार करने के नये तरीके बन गये हैं, उन पर विचार करना चाहिए, आज व्यक्ति सामने सामने खड़े हो कर शत्रुता नहीं निकालता, बल्कि पीठ पीछे छुरा भोंकने में विश्वास करता है, ऊपर से मित्रता का दिखावा करके नुकसान पहुंचाता है, और ऐसी स्थिति में आपके लिए जरूरी है, कि उसके प्रहार का मुंह तोड़ जवाब दें, जो तांत्रिक प्रयोग आप पर कर दिया है, उससे छुटकारा पायें, और अपने जीवन को ज्यादा सुखी, ज्यादा सफल और ज्यादा सम्पन्न बनायें।

रक्षा प्रयोग

तांत्रिक प्रयोग दूर करने के साथ साथ रक्षा प्रयोग भी सम्पन्न करवा लेना चाहिए, जिससे वापिस कोई दूसरी बार यदि तांत्रिक प्रयोग करे भी, तो वह निष्फल हो जाय, या आप पहले से ही स्वयं का या परिवार का अथवा व्यापार के लिए रक्षा प्रयोग सम्पन्न करवा लें, जिससे कि आने वाले खतरे से आप बच सकें, और जीवन में तकलीफ न हो।

जैसा कि मैंने बताया, कि तांत्रिक प्रभाव को दूर करना, विशेष विद्वान या जानकार से ही सम्भव है, सामान्य ज्योतिषी या तांत्रिक आपको झूठा आश्वासन दे सकता है, आप ≈ व्यर्थ में खर्च तो करवा सकता है, परन्तु उससे समस्या का समाधान नहीं हो सकता, क्योंकि यदि एक बार तांत्रिक प्रयोग हो जाता है, तो उसे दूर करने के लिए यह जानना जरूरी होता है, कि यह तांत्रिक प्रयोग किसने करवाया है, तन्त्र की सैकड़ों विधाओं में से आप पर कौन सा तांत्रिक प्रयोग हुआ है, और उस तांत्रिक प्रयोग की काट क्या है, किस विधि से या किस प्रयोग से वह तांत्रिक प्रभाव समाप्त हो सकता है।



ऐसा ज्ञान प्रत्येक साधक या व्यक्ति के पास नहीं होता पत्रिका आपके लिए सहायक है, और उसका उद्देश्य है, कि आपके जीवन में पूर्ण सुख हो, उसका लक्ष्य है, कि आपके जीवन की बाधाएं दूर हों, और आप निरन्तर उन्नति करें, और इसके लिए आप पत्रिका के माध्यम से, श्रेष्ठ कोटि के जानकार से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

आप नीचे दिया हुआ प्रपत्र भर कर या इसकी प्रतिलिपि बना कर हमें भेज दें, और यह सारी जानकारी आप रजिस्टर्ड डाक से भेजें, इसमें अपनी बात को खुलासा लिखें।

और यदि सम्भव हो, तो आप टेलीफोन पर या व्यक्तिगत रूप से आ कर पूज्य गुरुदेव से भेंट कर लें, और अपनी समस्या का समाधान प्राप्त कर योग्य जानकार से या श्रेष्ठ विद्वानों से इसका उपचार करा लें।

प्रपत्र

मैं काफी समय से नीचे दी हुई समस्याओं से परेशान हूं।

समस्या का विस्तार से विवरण

(यहां आप अपनी समस्या को विस्तार से लिखें या साथ में अलग कागज पर पूरा विवरण लिखकर इस प्रपत्र के साथ नत्थी कर लें।)

मेरा नाम...

मेरा पूरा पता...

....

मेरी पत्रिका सदस्यता संख्या..............................

कृपया इस प्रपत्र के साथ रजिस्टर्ड टिकट लगा हुआ और उस पर आपका स्वयं का पूरा पता लिखा हुआ, लिफाफा होना चाहिए जिससे कि पत्रिका इस संबन्ध में आपको मार्ग दर्शन दे सके।

यों आप टेलीफोन ३२२०६ से सम्पर्क स्थापित कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

धूमावती जयन्ती : ३१-५-९०

शत्रुओं पर

बिजली की तरह कड़किये

धूमावती प्रयोग

से

आदिकाल से प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा रही है, कि वह पूरी क्षमता के साथ उन्नति की तरफ अग्रसर हो, और अपने जीवन में जो कुछ चाहता है, वह उसे पूरी तरह मिल जाय।

पर हम जो प्रयत्न करते हैं, उसमें हमें सफलता नहीं मिल पाती, इसके कई कारणों में से एक प्रमुख कारण यह है, कि चाहे अनचाहे, जाने अनजाने कई शत्रु स्वत: पैदा हो जाते हैं, और वे हमारी प्रगति में बाधायें डालते हैं। इस प्रकार से हमारे जीवन में जो प्रगति होनी चाहिए, वह नहीं हो पाती, क्योंकि हमारी सारी शक्ति इन गुप्त शत्रुओं का सामना करने में ही व्यतीत हो जाती है।

केवल हमारे जीवन में व्यक्ति ही शत्रु नहीं होते अपितु शास्त्रों में नौ प्रकार के शत्रु माने गये हैं, जिनकी वजह से हमारी प्रगति सही प्रकार से नहीं हो पाती, वे नौ शत्रु हैं।--

१-प्रत्यक्ष शत्रु-जिससे हम शत्रुता का भाव रखते हैं।

२-अप्रत्यक्ष शत्रु-जो स्पष्ट रूप से हमारे सामने तन कर खड़ा नहीं है, परन्तु उसकी सारी प्रवृत्तियां शत्रुवत ही हैं।

३- विश्वासघाती शत्रु-जो हमारे मित्र हैं, हमारे व्यापार में पार्टनर हैं, जिन पर हम भरोसा करते हैं, समय पड़ने पर वे ही हमें धोखा दे देते हैं, या पीठ में छुरा भौंक देते हैं, ऐसे शत्रु ज्यादा नुकसान दायक होते हैं।

४- ऋण शत्रु-कर्जा अपने आप में पूर्ण शत्रु है, क्योंकि जब पैसे मांगने वाला व्यक्ति सुबह सुबह छाती पर आ धमकता है तो आपको जो वेदना होती है, वह मुक-

भोगी ही समझ सकता है, इसके लिए यह शत्रु भी हमारे जीवन की उन्नति में पूर्ण रूप से बाधक है।

५- दरिद्रता शत्रु–दरिद्रता या निर्धनता हमारे जीवन का प्रबल शत्रु है, क्योंकि जब घर में गरीबी होती है, तो हम अपने जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते, हम अपने जीवन में जो उन्नति चाहते हैं वह नहीं कर पाते, हम अपने जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं वह कर नहीं पाते, क्योंकि यह दरिद्रता हर कदम पर हमारा रास्ता रोक कर खड़ी हो जाती है और पग पग पर हमें अपमानित होना पड़ता है, इसलिए दरिद्रता शत्रु हमारे जीवन में पूर्ण रूप से बाधक है।

६- रोग शत्रु–जीवन में सब कुछ होते हुए भी यदि आदमी बीमार अस्वस्थ और कमजोर है, या नई नई बीमारियों से वह घिरा हुआ है, तो उसका सारा उत्साह सारा जोश अपने आप में ही समाप्त हो जाता है, और जीवन को जीने की जो उमंग होती है, वह उमंग ही समाप्त हो जाती है, अतः इस रोग से छुटकारा पाना जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है।

७- कुभार्या शत्रु–हम अपने जीवन में विवाह इसी लिए करते हैं कि पतिव्रता और श्रेष्ठ पत्नी मिले, और वह हमारे गृहस्थ जीवन को सही प्रकार से संचालित करें पर यदि वह पत्नी ही कुमार्ग पर हो, बीमार हो, कदम कदम पर अपमानित करने वाली हो, भली प्रकार से सुख न देने वाली हो तो निश्चय ही वह शत्रु के समान ही होती है, हम समाज भय से उसे कुछ कह नहीं सकते, और बराबर अपमान का घूंट पीते रहना पड़ता है।

८- कुपुत्र शत्रु–यदि पुत्र नहीं हो, तो वह भी शत्रुवत् हुआ, और यदि पुत्र है, मगर वह परेशानी पैदा करने वाला है, अशिक्षित, मूर्ख है, भ्रष्ट है, कुमार्ग पर चलने वाला है, आज्ञाकारी नहीं है और सही प्रकार से कमाने वाला या उन्नति करने वाला नहीं है, आलसी है, तो वह भी शत्रु ही माना जाता है।

९- भाग्यहीनता शत्रु–यदि हमारा भाग्य ही कमजोर है, हम अच्छे के लिए प्रयत्न करें, और सफलता न मिले,



यदि हम परिश्रम करें और उसका परिणाम प्राप्त न हो, यदि हम व्यापार के लिए जी तोड़ मेहनत करें और उससे लाभ न मिले, तो यह भाग्य का दोष ही माना जाता है और ऐसा भाग्य भी शत्रुवत ही होता है।

उपरोक्त नौ प्रकार के शत्रु माने गये हैं, इनमें से यदि एक से अधिक आपके शत्रु हैं, तो आपके जीवन की प्रगति रुक जाती है, आपके जीवन की आकांक्षा, जीवन की इच्छाएं सब कुछ समाप्त हो जाती हैं और जीवन में आप जो कुछ करना चाहते हैं, इन शत्रुओं की वजह से कुछ भी नहीं कर पाते, और एक प्रकार से आपका जीवन सामान्य सा जीवन बन कर रह जाता है।

उपनिषदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है, कि हर हालत में अपने शत्रुओं को समाप्त करना ही चाहिए, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना ही जीवन की पूर्णता है, जो व्यक्ति जितना जल्दी अपने शत्रुओं का संहार कर सकता है, उसे उतना ही ज्यादा समय मिल जाता है, कि वह अपने जीवन में पूर्ण प्रगति करे।

इस लेख के शीर्षक -शत्रुओं पर बिजली की तरह कड़कियें- का तात्पर्य शत्रुओं को मटियामेट करना नहीं है, शत्रुओं को समाप्त करने का भाव नहीं है, अपितु इस शीर्षक का तात्पर्य है कि आपका व्यक्तित्व सूर्य के समान प्रखर और तेजस्वी हो, जिससे शत्रु भयभीत रहे, और आपके सामने खड़े न हो सके, जिससे रोग, ऋण और दरिद्रता समूल नष्ट हो सके, जिससे पत्नी और पुत्र सही मार्ग पर आकर आपके लिए सहायक हो सके, जिससे आपके विश्वासघाती मित्र और व्यापार के पार्टनर आपके अनुकूल बन सकें, और इस प्रकार से आपका जीवन ज्यादा सुखमय ज्यादा आनन्ददायक और ज्यादा श्रेष्ठ बन सके।

धूमावती – एक मात्र उपाय

यों तो शत्रुओं को समाप्त करने के लिए तांत्रिक ग्रन्थों में कई विधान बताये गये है, परन्तु हमारा उद्देश्य शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाना है, उनकी शत्रुता समाप्त करनी है, और इसके लिए आज के युग में केवल धूमावती साधना ही सर्वश्रेष्ठ और तुरन्त प्रभाव देने वाली है।

यों तो बगलामुखी, छिन्नमस्ता आदि साधनाएं भी शत्रुओं को समाप्त करने के लिए ही हैं, परन्तु उनका प्रभाव धीमे-धीमे होता है, इसकी अपेक्षा धूमावती प्रयोग तुरन्त असर दिखाने वाला है, साधना समाप्त होते-होते ही अनुकूल परिणाम दिखाई देता है, और इस साधना के माध्यम से हम पीछे बताये हुए सभी शत्रुओं पर पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं, इसीलिए तो उच्चकोटि के शास्त्रों में धूमावती को सर्वश्रेष्ठ साधना बताया है, उन्होंने स्पष्ट किया है, कि यदि साधक किसी भी अमावस्या को या धूमावती के दिन इस एक दिवसीय प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो वह सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है, और सभी प्रकार की समस्याओं से ठीक हो जाता है।

महापदि महाघोरे महारोगे महारणे।
शत्रुच्चाटे मारणादौ जन्तूनाम्मोहने तथा ॥
पठेत्मंत्रमिदन्देवि सर्वत्र सिद्धिवाग्भवेत्।

शाक्तप्रमोद पृ० २८४

अर्थात किसी भी प्रकार के रोग, ऋण, दुर्भाग्य और शत्रु बाधा से मुक्ति केवल धूमावती मंत्र ही दे सकता है।

धूमावती दिवस

ज्योतिष नियमों के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल ८ को धूमावती जयन्ती मनाई जाती है, जो कि इस वर्ष ३१-५-९० को आ रही है।

जो सही अर्थों में साधना करना चाहते है, जो सही अर्थों में धूमावती को प्रत्यक्ष करना चाहते हैं, जो हकीकत में अपने शत्रुओं का संहार कर धूमावती सिद्धि चाहते हैं, जो उपरोक्त नौ प्रकार के शत्रुओं को परास्त कर पूर्ण विजय प्राप्त करना चाहते है, उन साधकों के लिये धूमावती जयन्ती पूर्ण वरदान की तरह है।

पत्रिका के सभी पाठकों और साधकों को चाहिए, कि इस वर्ष धूमावती दिवस ३१-५-९० को है, अतः इस दिन निश्चय ही धूमावती प्रयोग सम्पन्न करें, जिससे कि उनके जीवन के सभी शत्रु समाप्त हो सकें, और जीवन में पूर्ण उन्नति प्राप्त कर सकें।

इस प्रयोग को सामान्य पढ़ा लिखा साधक भी सम्पन्न कर सकता है, इसमें कोई जटिल क्रिया नहीं है, और यदि साधना में किसी वजह से गलती भी हो जाय, तब भी किसी प्रकार का अहित नहीं हो सकता, यों यदि साधक इस साधना को सम्पन्न करता है, तो उसे अनुकूल परिणाम ही प्राप्त होते हैं, और कई बार तो साधना समाप्त होते होते ही, अनुकूल परिणाम अनुभव होने लग जाते हैं।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, साधकों को चाहिए कि वे इस दिवस का उप-

योग करें, यदि किसी वजह से धूमावती दिवस का प्रयोग न कर सके तो किसी भी अमावस्या को धूमावती साधना सम्पन्न की जा सकती है।

साधना सामग्री

इसके लिए विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, केवल पिप्पलाद ऋषि द्वारा वर्णित "धूमावती महायंत्र" की आवश्यकता होती है, जो कि विशेष मंत्रों से सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त होता है, इसके साथ ही साथ तांत्रिक ग्रन्थों में बताया है, कि यह प्रयोग काले हकीक मनकों की माला से ही मन्त्र जप होना चाहिए।

इसके अलावा इस साधना में अन्य किसी भी पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती।

साधना प्रयोग

साधक इस साधना को दिन या रात्रि में कभी भी सम्पन्न कर सकता है, वह स्नान कर लाल आसन पर बैठ जाय और लाल धोती धारण करें, अपने कन्धों पर भी लाल धोती ओढ़ लें, फिर सामने एक तांबे के पात्र में श्रेष्ठ मंत्र सिद्ध धूमावती महायंत्र को स्थापित कर दें, जो कि पिप्पलाद ऋषि द्वारा वर्णित मंत्रों से सिद्ध और प्राणश्चेतना युक्त हो, यह यंत्र आगे जीवन भर उपयोगी रह सकता है।

इसके बाद सामने तेल का दीपक लगा दें और इसमें किसी भी प्रकार का तेल भर कर जला दें।

इसके बाद काले मनकों की हकीक माला से मंत्र जप सम्पन्न करें, इसका प्रत्येक मनका विशेष मंत्रों से मंत्र सिद्ध होना चाहिए और यह ऐसी हकीक माला होनी चाहिए जिसका पहले कभी प्रयोग नहीं किया हो।

साधक को चाहिए वह इस यंत्र के सामने हाथ में जल लेकर संकल्प करे, कि मैं समस्त प्रकार के शत्रुओं को समाप्त कर जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति चाहता हूं।

यदि कोई विशेष शत्रु हो जो आपको जरूरत से ज्यादा परेशान कर रहा हो तो उस शत्रु का नाम लेकर उच्चारण कर सकते हैं, कि मैं इस प्रयोग से उस शत्रु की मृत्यु चाहता हूं।

इसके बाद दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर निम्न धूमावती मंत्र की ११ माला मंत्र जप करें—

धूमावती मंत्र

॥ धूं धूं धूमावती ठः ठः ॥

यह मंत्र अपने आपमें छोटा सा दिखाई देते हुए भी अत्यन्त तेजस्वी और महत्वपूर्ण है।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब धूमावती यंत्र और माला को किसी नदी तालाब या कुए में विसर्जित कर दें अथवा किसी मंदिर में जाकर रख दें।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है जो कि व्यक्ति के पूरे जीवन को संवारने, सुखमय बनाने और उन्नति युक्त बनाने में सहायक है।

मुझे विश्वास है, कि मेरे पत्रिका पाठक और साधक जो विविध समस्याओं से ग्रस्त हैं, जो विविध शत्रुओं से परेशान हैं, इस प्रयोग के द्वारा उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हुए, श्रेष्ठ और अद्वितीय उन्नति प्राप्त कर सकेंगे।

इस साधना को सम्पन्न करने के एक महीने बाद प्रत्येक साधक पत्रिका कार्यालय को पत्र लिखें कि इस साधना को सम्पन्न करने से उन्हें अपने जीवन में कितनी अनुकूलता प्राप्त हुई।

हमें विश्वास है, कि निश्चय ही इस प्रकार के प्रयोग से साधक अपने जीवन में सभी दृष्टियों से शत्रुओं का संहार कर या शत्रुओं की शत्रुता समाप्त कर पूर्ण उन्नति प्राप्त कर सकेंगे।

अपरा एकादशी : २१-५-९०

छणणणण छणणणण छूम छणणणण छम

जब नाभि दर्शना अप्सरा

मेरे कक्ष में नाच उठी

गुरुदेव ! मुझे क्षमा करें, मैं यह लेख और अनुभव भेजते हुए संकोच सा अनुभव कर रहा हूं, परन्तु जो घटना मेरे साथ घटित हुई, वह मैं सारे पत्रिका पाठकों और साधकों को बता देना चाहता हूं।

मैं नहीं कह सकता, कि आप इस लेख को पत्रिका में प्रकाशित करेंगे, या नहीं, परन्तु यह मेरा व्यक्तिगत प्रामाणिक अनुभव है, जिसे मैंने नवरात्रि के अवसर पर पंचमी की रात्रि को आपकी आज्ञा पर स्पष्ट करके बता दिया था, और आपने स्वयं प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया था, कि तुमने "नाभि दर्शना अप्सरा" को प्रामाणिक रूप से सिद्ध किया है।

पूज्य गुरुदेव! आपके ये दो शब्द ही मेरे लिए शाबाशी भरे थे, मुझे जहां आपका प्रोत्साहन मिला, मेरी पीठ पर आपने हाथ रखा था, वहीं मुझे भारतीय साधना साहित्य पर भी विश्वास हुआ, इससे मेरा हौसला बढ़ा, और मुझे यह विश्वास हुआ, कि कोई भी साधना सिद्ध की जा सकती है, यदि साधक के मन में हौसला हो, यदि गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त हो।

जब कालीदास ने अप्सरा को सिद्ध किया

मैं कालीदास पर पी०एच०डी० कर रहा था, शोध करते-करते मुझे प्रामाणिक रूप से यह जानकारी मिली, कि कालीदास ने नाभि दर्शना अप्सरा को सिद्ध किया था, और इसी साधना की बदौलत उन्हें वचन सिद्धि प्राप्त हुई थी, इसी अप्सरा की साधना से उनका पूर्ण कायाकल्प हुआ था, और इसी अप्सरा के सानिध्य में रहने की वजह से वे जीवन भर मस्ती में, उमंग में, जोश में, और

आनन्द में काव्य लिखते रहे, उनके सारे काव्य का मूल बिन्दु "नाभि दर्शना अप्सरा" ही थी।



राजा भोज के अत्यधिक हठ करने पर एक दिन कालीदास ने राजा भोजको नाभि दर्शना को प्रत्यक्ष प्रगट कर दिखा दिया, रूप में, सौन्दर्य में, और यौवन में वह छलकते हुए जाम की तरह थी, उसका सारा शरीर स्वर्ण वर्ण और चन्द्रमा की चांदनी में नहाया हुआ सा लग रहा था, पुष्प से भी कोमल और नाजुक नाभि दर्शना को कालीदास के कक्ष में थिरकते देख कर राजा भोज अत्यधिक संयमित होते हुए भी बेसुध से हो गये, उनकी आंखों के सामने हर क्षण नाभि दर्शना ही दिखाई देती रही।

नाभि दर्शना को सिद्ध करने की वजह से ही कालीदास अपने जीवन में अटूट धन संपदा के स्वामी बने, वे नित्य नाभि दर्शना को साधना के बल पर प्रगट करते और उसके साथ उसी प्रकार से हास्य विनोद करते, मनोरंजन करते, लिपटते और बातें करते, जैसे कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका को प्राप्त करने के बाद करता है।

और नाभि दर्शना अत्यधिक प्रसन्न होकर बिना मांगे ही कालीदास को सोने के आभूषणों, स्वर्णमुद्राओं और विविध वस्त्रों से उस कक्ष को भर देती, कीमती उपहारों का ढेर लगा देती और अप्सरा लोक से अपने हाथों से स्वादिष्ट भोजन बनाकर कालीदास को भोजन कराती।

इस रिसर्च के दौरान मैंने भारत के कई स्थानों की यात्रा की, उज्जैन के ग्रन्थालय में मुझे एक हस्तलिखित प्रति में इसी घटना के बारे में पुनः जानकारी

मिली कि नाभि दर्शना को प्रामाणिकता के साथ सिद्ध कर कालीदास ने जहां धन दौलत और ऐश्वर्य का ढेर लगा लिया था, वहीं उसके स्पर्श और साहचर्य से कालीदास का शरीर यौवन से परिपूर्ण हो गया था, उनके चेहरे पर एक अजीब सा आकर्षण और आनन्द का श्रोत उमड़ आया था पूरा शरीर रोगरहित हो कर थिरकने लगा था, और काया कल्प हो कर कालीदास जीवन भर चिर यौवनमय बने रहे।

यही नहीं अपितु इस नाभि दर्शना अप्सरा के साहचर्य से उनकी काव्य प्रतिभा फूट पड़ी और उन्होंने मेघदूत, जैसे अद्वितीय काव्य की रचना की। इस मेघदूत में जिस सौन्दर्यमयी नायिका का वर्णन है, वह नाभि दर्शना अप्सरा ही है।

और इस हस्त लिखित प्रति से मुझे वह साधना विधि और मंत्र भी ज्ञात हुआ, जिसे सम्पन्न कर कालीदास अपने जीवन में अप्सरा को सिद्ध कर सके थे, और जब चाहते, उस अद्वितीय सौन्दर्यमयी अप्सरा को अपने कक्ष में बुला लेते, मुग्ध होकर उसका नृत्य देखते रहते, तन्मय हो कर उसका संगीत सुनते रहते, और मस्त हो कर उसके शरीर सुख का आनन्द लेते रहते।



मैंने उस साधना विधि और मंत्र को नोट कर लिया, एक बार तो मैंने विचार किया कि इसके बारे में पूज्य गुरुदेव जी से जानकारी प्राप्त करूं, और सलाह लूं परन्तु दूसरे ही क्षण मैंने विचार किया कि यदि उनकी अस्वीकृति आ गई तो मुझे मन मार कर रह जाना पड़ेगा और मैं मेघदूत की उस सौन्दर्यमयी नायिका नाभि दर्शना अप्सरा को हर हालत में सिद्ध करना ही चाहता था, और मैंने उस पुस्तक में लिखे हुए तरीके के अनुसार ही साधना सम्पन्न करने का निश्चय कर लिया।

नाभि दर्शना अप्सरा

यों तो साधना ग्रन्थों में १०८ अप्सराओं के बारे में विवरण मिलता है, और प्रत्येक अप्सरा को सिद्ध करने की विधि भी दी हुई है, परन्तु ये साधना ग्रन्थ भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि नाभि दर्शना अप्सरा इन सब में श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है, वह अद्वितीय सौन्दर्यमयी होने के साथ साथ दयालु है, और वह स्वयं बार बार पृथ्वी तल पर विचरण करना चाहती है, इसीलिए अन्य अप्सराओं की अपेक्षा नाभि दर्शना अप्सरा सिद्ध करना ज्यादा सरल है।

साधना ग्रन्थों में नाभि दर्शना के बारे में जो कुछ मिलता है उसके अनुसार नाभि दर्शना, षोडश वर्षीय अत्यन्त सुकुमार और सौन्दर्य की सम्राज्ञी है। उसका सारा शरीर कमल से भी ज्यादा कोमल, पुष्प से भी ज्यादा नाजुक और गुलाब से भी ज्यादा सुन्दर है, उसके सारे शरीर से धीमी धीमी सुगन्ध प्रवाहित

होती रहती है, जो कि उसकी उपस्थिति का भान कराती रहती है, इस अप्सरा की काली और लम्बी आंखें, लहराते हुए झरने की तरह केश और चन्द्रमा की तरह मुस्कराता हुआ चेहरा, कमल नाल की तरह लम्बी बांहें और सुन्दरता से लिपटा हुआ पूरा शरीर एक अजीब सी मादकता बिखेर देता है, और इसे इन्द्र का वरदान प्राप्त है, कि जो भी इसके सम्पर्क में आता है, वह पुरुष, पूर्ण रूप से रोगों से मुक्त होकर चिर यौवनमय बन जाता है, उसके शरीर का काया कल्प हो जाता है, और पुरुष की दृष्टि से वह अत्यन्त प्रभावशाली बन जाता है।

और फिर नाभिदर्शना अप्सरा को विविध उपहार देने का शौक है, जो पुरुष इसके सम्पर्क में होता है, उसे हीरे, मोती, स्वर्ण मुद्राओं से एवं विविध उपहारों से भिजत कर देती है, जीवन भर उस पुरुष के अनुकूल रहती हुई वह उसका प्रत्येक मामले में मार्गदर्शन करती है, मंत्री की तरह सलाह देती है, मातृत्व की तरह विविध स्वादिष्ट भोजन कराती है, प्रेमिका की तरह सुख आनन्द की वर्षा करती रहती है।

नाभि दर्शना अप्सरा साधना

अप्सरा साधना के लिए "अपरा एकादशी" अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जो कि इस वर्ष २१-५-९० को सम्पन्न हो रहा है, यह एक दिन की साधना है, और साधक इस साधना को सिद्ध कर सकता है, मैंने यह भी अनुभव किया है, कि यदि किसी वजह से अपरा एकादशी को यह साधना सिद्ध न कर सके, तो किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सिद्ध की जा सकती है।



इस साधना को सिद्ध करने में थोड़े बहुत धैर्य की जरूरत है, क्योंकि कई बार पहली बार में सफलता नहीं भी मिल पाती, तो साधक को चाहिए, कि वह इसी साधना को दूसरी बार या तीसरी बार भी सम्पन्न करें, परन्तु अगले किसी भी शुक्रवार की रात्रि को ही यह साधना सम्पन्न करें।

साधना समय

यह साधना रात्रि को ही सम्पन्न की जा सकती है,

और साधक चाहे तो अपने घर में या किसी भी अन्य स्थान पर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है"।

साधना विवरण

मुझे उस हस्त लिखित प्रति में जिस प्रकार से साधना विवरण ज्ञात हुआ था, और जिस प्रकार से मैंने साधना सिद्ध की, उसे मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं।

अपरा एकादशी की रात्रि को या किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक सुन्दर, सुसज्जित वस्त्र पहिने, इसमें यह जरूरी नहीं है कि साधक धोती ही पहिने, अपितु उसको जो वस्त्र प्रिय हो, जो वस्त्र उसके शरीर पर खिलते हों, या जिन वस्त्रों को पहिनने से वह सुन्दर लगता हो, वे वस्त्र धारण कर साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन पर बैठे।

बैठने से पूर्व अपने वस्त्रों पर सुगन्धित इत्र का छिड़काव करें और पहले से ही दो सुन्दर गुलाब की मालाएं ला कर अलग पात्र में रख दें, यदि गुलाब की माला उपलब्ध न हो तो किसी भी प्रकार के पुष्पों की माला ला कर रख सकता है।

फिर सामने एक रेशमी वस्त्र पर अद्वितीय "नाभि दर्शना महायंत्र" को स्थापित करें और केसर से उस पर तिलक करें। यंत्र के पीछे "नाभि दर्शना चित्र" को फ्रेम में मढ़वा कर रख दें, और सामने सुगन्धित अगरबत्ती एवं शुद्ध घृत का दीपक लगावें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक नाभि दर्शना अप्सरा को प्रेमिका रूप में सिद्ध करना चाहता हूं, जिससे कि वह जीवन भर मेरे वश में रहे, और मुझे प्रेमिका की तरह सुख आनन्द एवं ऐश्वर्य प्रदान करे।

इसके बाद "नाभि दर्शना अप्सरा माला" से निम्न मंत्र जप संपन्न करें, इसमें ५१ माला मंत्र जप उसी रात्रि को सम्पन्न हो जाना चाहिए, हो सकता है, इसमें तीन या चार घंटे लगे।

अगर बीच में घुंघुरुओं की आवाज आवे या किसी का स्पर्श अनुभव हो, तो साधक विचलित न हो और अपना ध्यान न हटावें, अपितु ५१ माला मंत्र जप एकाग्र चित्त हो कर समाप्त करें, इस साधना में जितनी ही ज्यादा एकाग्रता होगी, उतनी ही ज्यादा सफलता मिलेगी।

५१ माला पूरी होते होते जब अद्वितीय अप्सरा घुटने से घुटना सटाकर बैठ जाय, तब मंत्र जप पूरा होने के बाद साधक अप्सरा माला को स्वयं धारण कर लें, और सामने रखी हुई गुलाब की माला उसके गले में पहिना दें, ऐसा करने पर नाभि दर्शना अप्सरा सामने रखी हुई दूसरी माला उठा कर साधक के गले में डाल देती है।

तब साधक नाभि दर्शना अप्सरा से वचन ले ले कि मैं जब भी अप्सरा माला से एक मंत्र जप करूं, तब तुम्हें मेरे सामने स शरीर उपस्थित होना है, और मैं जो चाहूं वह मुझे प्राप्त होना चाहिए, पूरे जीवन भर मेरी आज्ञा का उल्लंघन न हो।

तब नाभि दर्शना अप्सरा साधक के हाथ पर अपना हाथ रखकर वचन देती है, कि मैं जीवन भर आपकी इच्छानुसार कार्य करती रहूंगी।

तब इस साधना को पूर्ण समझें, और साधक अप्सरा के जाने के बाद उठ खड़ा हो।

साधक को चाहिए, कि वह इस घटना को केवल अपने गुरु के अलावा और किसी के सामने स्पष्ट न करे, क्योंकि साधना ग्रन्थों में ऐसा ही उल्लेख मुझे पढ़ने को मिला है।

मैंने जिस मंत्र से इस साधना को सिद्ध किया है, वह मंत्र है –

।। ॐ ऐं श्रीं नाभिदर्शना अप्सरा प्रत्यक्ष श्रीं ऐं फट्।।

उपरोक्त मंत्र गोपनीय है, साधना सम्पन्न होने पर नाभिदर्शना अप्सरा महायंत्र को अपने गोपनीय स्थान पर

– शेष पृ० ३६ पर –

राहु जयन्ती २७-५-६०

रोग-नाशार्थ
राहु प्रयोग

नौ ग्रहों में राहु एक मात्र ऐसा ग्रह है, जो मानव जीवन के समस्त रोगों को नाश एवं समाप्त करने में सक्षम है, चाहे वह रोग किसी भी वजह से हुआ हो, चाहे किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा हो, और चाहे दैविक अथवा भौतिक किसी भी प्रकार का रोग हो, राहु प्रयोग से वह रोग समाप्त हो सकता है।

इस प्रयोग को रोगी स्वयं कर सकता है, या घर का कोई सदस्य किसी अन्य के लिए भी यह प्रयोग कर सकता है, दिखने में भले ही यह प्रयोग सामान्य प्रतीत हो, पर पत्रिका पाठकों के लिए यह प्रयोग वरदान स्वरूप है, और इस प्रयोग से वह किसी भी प्रकार के रोग का शमन कर सकता है।

बुखार, हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, शरीर फूलना, मोटापा होना, आंखों की रोशनी का कमजोर होना, पेशाब से सम्बन्धित रोग, गर्भाशय से संबन्धित रोग आदि सभी प्रकार के रोगों का उपाय इस राहु प्रयोग से सम्पन्न किया जा सकता है।

और यह स्पष्ट है, कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से आने वाली विपत्ति, बाधाएं, और बीमारियां पहले से ही समाप्त हो जाती हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो यह आने वाले अशुभ समय को नियंत्रण में लेने का प्रयोग है। इससे बाल रक्षा तो होती ही है, यदि बालक बीमार हो, या कमजोर हो, या किसी प्रकार की उसे तकलीफ हो, तो उसके लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना प्रयोग

इस साधना प्रयोग में **"राहु महायंत्र"** की आवश्यकता होती है, जो कि रोग शमनार्थ प्रयोग से सिद्ध होना चाहिए, इसके अलावा **"राहु माला"** की आवश्यकता होती है।

प्रयोग करते समय यदि साधक स्वयं के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे, तो खुद का नाम उच्चारण करे या किसी अन्य के लिए या परिवार के किसी सदस्य के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे तो उसका नाम उच्चारण करे।

इस प्रयोग में मात्र एक माला मंत्र जप आवश्यक है, इसके अलावा यदि तेल का दीपक लगाया जाय तो उचित है, अन्यथा कोई विशेष आवश्यकता नहीं होती। साधक सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक अमुक व्यक्ति के लिए अमुक प्रकार के रोग को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

राहु प्रयोग

फिर हाथ में काले तिल और एक पीला पुष्प लेकर रोगी पर सात बार घुमायें और सामने वह सामग्री किसी

पास में रख दें, इसके बाद निम्न मंत्र की एक माला अर्थात् १०८ बार उच्चारण करें।

इसके बाद पुनः वह सामग्री रोगी पर सात बार घुमायें, और बाद में उसे जहां तीन रास्ते मिलते हों, वहां फिकवा दें, या गड़वा दें।

इसके बाद अर्थात् मंत्र जप पूरा होने पर रोगी को चाहिए कि वह साधक के पैर छू कर प्रणाम करे और साधक आशीर्वाद स्वरूप उसकी पीठ या सिर पर थपकी दे।

इस प्रकार यह प्रयोग समाप्त होता है, परन्तु जिस दिन यह प्रयोग समाप्त होता है, उसी दिन से रोगी को आराम मिलना प्रारम्भ हो जाता है, यदि साधक उचित समझे तो उसी रोगी पर यह प्रयोग तीन चार बार भी कर सकता है, पर एक दिन में एक बार ही प्रयोग करना चाहिए।

इस प्रयोग का प्रारम्भ राहु जयन्ती अर्थात् ९७-५-९० को प्रारम्भ करना चाहिए उसके बाद यह राहु महायंत्र जीवन भर उपयोगी रहता है, और किसी भी दिन यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु रविवार, मंगलवार, शुक्रवार और शनिवार चार दिन ही प्रयोग करना चाहिए, सोम, बुध गुरुवार को किसी भी रोगी पर यह प्रयोग सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

राहु महामंत्र

।। ॐ क्लीं क्लीं रोग नाशार्थं राहवे क्लीं क्लीं फट् ।।

उपरोक्त मंत्र की एक माला ही फेरनी पर्याप्त है, जब प्रयोग सम्पन्न हो जाय तब यह माला और महायंत्र घर में कहीं पर भी किसी भी स्थान पर रख सकते हैं और अगली बार फिर इस माला और इस महायंत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस प्रयोग को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है तथा दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए आसन, दिशा आदि की कोई व्यवस्था नहीं है, साधक किसी भी प्रकार के आसन पर और किसी भी दिशा की ओर मुंह कर बैठ सकता है।

पाठकों एवं साधकों के लिए यह प्रयोग वरदान स्वरूप है और उन्हें इस प्रयोग को आजमाना चाहिए, मुझे विश्वास है कि निश्चय ही वे साधक अपने प्रत्येक उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। ●

(पृष्ठ ३४ का शेष भाग)

रख दें, और अप्सरा चित्र को भी अपने बाक्स में रख दें, जो गले में अप्सरा माला पहिनी हुई है, वह भी अपने घर में गुप्त स्थान पर रख दें, जिससे कि कोई दूसरा उसका उपयोग न कर सके।

जब साधक को भविष्य में नाभिदर्शना अप्सरा को बुलाने की इच्छा हो, तब उस महायंत्र के सामने अप्सरा माला से उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप कर लें, अभ्यास होने के बाद तो यंत्र या माला की आवश्यकता भी नहीं होती, केवल मात्र सौ बार मंत्र उच्चारण करने पर ही अप्सरा प्रत्यक्ष प्रगट हो जाती है।

पूज्य गुरुदेव की नवरात्रि के अवसर पर उनकी आज्ञा से सत्यता असत्यता स्पष्ट करने के लिए मैंने एक माला मंत्र जप कर अप्सरा को प्रगट कर पूज्य गुरुदेव को दिखा दिया था, परन्तु मैं कई कारणों से अपने नाम और पते का विवरण देना नहीं चाहता, इसलिए गुरुदेव से प्रार्थना है, कि वह मेरे अनुभव को यदि प्रकाशित करें, तो मेरा नाम व पता न दें।

इस साधना को स्त्रियां भी सिद्ध कर सकती हैं, नाभि दर्शना अप्सरा के रूप में उन्हें अभिन्न शक्ति प्राप्त हो जाती है, और उस शक्ति के साहचर्य से साधिका के शरीर का भी काया कल्प हो जाता है, और ऐसी साधिका अत्यन्त सुन्दर, यौवनमय और सम्मोहक बन जाती है।

वास्तव में ही यह साधना बालक या वृद्ध किसी भी वर्ण या जाति का व्यक्ति या स्त्री संपन्न कर सकती है, और यदि विश्वास एवं श्रद्धा के साथ इस साधना को सम्पन्न करें, तो अवश्य ही पूर्ण सफलता मिलती है। ●

राहु जयन्ती २७-५-९०

रोग-नाशार्थ
राहु प्रयोग

नौ ग्रहों में राहु एक मात्र ऐसा ग्रह है, जो मानव जीवन के समस्त रोगों को शान्त एवं समाप्त करने में सक्षम है, चाहे वह रोग किसी भी वजह से हुआ हो, चाहे किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा हो, और चाहे दैविक अथवा भौतिक किसी भी प्रकार का रोग हो, राहु प्रयोग से वह रोग समाप्त हो सकता है।

इस प्रयोग को रोगी स्वयं कर सकता है, या घर का कोई सदस्य किसी अन्य के लिए भी यह प्रयोग कर सकता है, दिखने में भले ही यह प्रयोग सामान्य प्रतीत हो, पर पत्रिका पाठकों के लिए यह प्रयोग वरदान स्वरूप है, और इस प्रयोग से वह किसी भी प्रकार के रोग का शमन कर सकता है।

बुखार, हार्ट अटैक, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, शरीर दुखना, मोटापा होना, आंखों की रोशनी का कमजोर होना, पेशाब से संबन्धित रोग, गर्भाशय से संबन्धित रोग आदि सभी प्रकार के रोगों का उपाय इस राहु प्रयोग से सम्पन्न किया जा सकता है।

और यह स्पष्ट है, कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से आने वाली विपत्ति, बाधाएं, और बीमारियां पहले से ही समाप्त हो जाती हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो यह आने वाले अशुभ समय को नियंत्रण में लेने का प्रयोग है। इससे बाल रक्षा तो होती ही है, यदि बालक बीमार हो, या कमजोर हो, या किसी प्रकार की उसे तकलीफ हो, तो उसके लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना प्रयोग

इस साधना प्रयोग में **"राहु महायंत्र"** की आवश्यकता होती है, जो कि रोग शमनार्थ प्रयोग से सिद्ध होना चाहिए, इसके अलावा **"राहु माला"** की आवश्यकता होती है।

प्रयोग करते समय यदि साधक स्वयं के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे, तो खुद का नाम उच्चारण करे या किसी अन्य के लिए या परिवार के किसी सदस्य के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे तो उसका नाम उच्चारण करे।

इस प्रयोग में मात्र एक माला मंत्र जप आवश्यक है, इसके अलावा यदि तेल का दीपक लगाया जाय तो उचित है, अन्यथा कोई विशेष आवश्यकता नहीं होती। साधक सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक अमुक व्यक्ति के लिए अमुक प्रकार के रोग को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

राहु प्रयोग

फिर हाथ में काले तिल और एक पीला पुष्प लेकर रोगी पर सात बार घुमायें और सामने वह सामग्री किसी

नृसिंह जयन्ती : ८-५-९०

तुम अपनी सारी चिन्ताएं मुझे दे दो
क्योंकि मैं तुम्हें
नृसिंह साधना दे रहा हूं

मनुष्य मर ही नहीं सकता और, वह आसानी से अपने जीवन के सौ साल पूरे कर सकता है, यदि उसे चिन्ताएं न हों, व्यक्ति बीमार रोगग्रस्त हो ही नहीं सकता, यदि उसे चिन्ताएं न हों, व्यक्ति असहाय और वृद्ध हो ही नहीं सकता, यदि उसे चिन्ताएं व्याप्त न हों।

चिन्ताओं के कारण

यदि सही रूप में देखा जाय तो हमारा सारा जीवन चिन्ताओं और आशंकाओं से भरा हुआ है। पग पग पर हमें चिन्ताएं खाये जा रही हैं, स्वास्थ्य की चिन्ता, व्यापार जमाने की चिन्ता, व्यापार बढ़ाने की चिन्ता, कर्ज समाप्त करने की चिन्ता, पैसों को सुरक्षित बचाये रखने की चिन्ता, संतान की चिन्ता, बीमारी की चिन्ता, राज्य कोप की चिन्ता, स्थानान्तरण की चिन्ता, पुत्री के विवाह की चिन्ता,—और यदि देखा जाय तो हमारे जीवन में चिन्ताएं ही चिन्ताएं हैं, और इन चिन्ताओं से पार पाने का कोई उपाय नहीं है।

या तो हम अपने जीवन में चिन्ताओं को दूर कर दें, चिन्ताओं को समाप्त कर दें, या फिर चिन्ताएं हमें समाप्त कर देंगी। असमय में ही बुढ़ापा आ जाना बाल झड़ने लगना, कम उम्र में ही कनपटियों पर बाल सफेद होना, कई प्रकार के रोग व्याप्त होना, ब्लड प्रेसर, हार्ट अटैक आदि बीमारियों से जूझना आदि इन चिन्ताओं की वजह से ही है, चिन्ताओं की वजह से हमारा सारा जीवन भार स्वरूप रह गया है। हमारे जीवन में जो आनन्द उमंग और उत्साह होना चाहिए, वह समाप्त हो गया है। वास्तविक हंसी और अट्टहास करना हम भूल गये हैं, यदि हम मुस्कराते भी हैं, तो नकली मुस्कराहट के साथ, यदि हम हंसते भी हैं तो फीकी हंसी के साथ, इसका कारण यह है, कि हमारे जीवन का जो स्रोत है, वह समाप्त हो गया है, हमारे जीवन का जो आनन्द है वह सूख गया है, हमारे जीवन का जो रस है वह चुक गया है।

और आज यदि हम आंख खोल कर चारों तरफ देखें तो बीमार असहाय कमजोर, और मरे मरे से लोग दिखाई देते हैं, उनके आंखों की चमक समाप्त हो गई है, उनके होठों पर मुस्कुराहट खतम हो गई है, उनके जीवन का आनन्द रहा ही नहीं, और इसीलिए वे जीवन के मध्यकाल में ही समाप्त होने लगे हैं।

और आप भी बहुत तेजी के साथ मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे हैं, क्योंकि यदि आप यह लेख पढ़ते समय एक दो मिनट के लिए आंखें बन्द कर के विचार करें और सोचें तो सैकड़ों चिन्ताएं आपके आस पास खड़ी अनुभव होंगी और जब तक ये चिन्ताएं हैं, तब तक आपके जीवन में आनन्द आ ही नहीं सकता।

पर मैं चिन्ताएं मिटा सकता हूं

निश्चित रूप से ये चिन्ताएं मिट सकती हैं, निश्चित रूप से तुम्हारा जीवन आनन्द और मस्ती से सराबोर हो सकता है, तुम्हारे होठों पर गीत गुनगुनाये जा सकते हैं तुम्हारी आंखों में चमक आ सकती है, तुम्हारे शरीर में यौवन की कान्ति दिखाई दे सकती है, तुममें उमंग, जोश और प्रफुल्लता आ सकती है, क्योंकि मैं तुम्हारी इन सारी चिन्ताओं को दूर करने की क्रिया बताने जा रहा हूं, मैं

यह साधना बताने जा रहा हूं जो अपने आप में महत्वपूर्ण है, यह वह साधना है, जिसे देवताओं ने भी सिद्ध की है, और ऋषियों ने इस साधना के माध्यम से पूर्ण आयु प्राप्त की है, इस साधना के माध्यम से बुढ़ापे को दूर धकेला है, और इस साधना के माध्यम से अपने जीवन को चिर यौवन मय बनाये रखा है, और वह साधना है, नृसिंह साधना, जो अपने आप में अद्‌भुत, अद्वितीय और अलौकिक है।

स्त्रियों के लिए तो यह साधना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इस साधना के द्वारा वे अपने जीवन में चिन्ता मुक्त हो सकती हैं, असमय में आने वाले बुढ़ापे को दूर धकेल सकती हैं, जीवन में तरोताजा बन सकती हैं, और जीवन का असली आनन्द ले सकती हैं।

नृसिंह साधना

नृसिंह का स्वरूप अपने आप में विचित्र है, इसका आधा भाग मनुष्य का है, तो आधा भाग शेर का, और यह एक संकेत है, कि मनुष्य इस साधना के द्वारा शेर के समान बलशाली, ताकतवान और हिम्मतवान बन सकता है, उसमें साहस और क्षमता आ सकती है, वह जोश और उमंग से आप्लावित हो सकता है, आवश्यकता है इसको पूर्णता के साथ सम्पन्न करने की, आवश्यकता है, इस साधना में विश्वास पैदा करने की, और तन्मयता के साथ इस साधना को सम्पन्न करने की।

जब हिरण्यकश्यप के अत्याचारों से पूरी पृथ्वी कांपने लगी, जब उसके अत्याचार प्रह्लाद पर जरूरत से ज्यादा बढ़ गये, जब वह किसी के नियन्त्रण में नहीं आ रहा था क्योंकि उसे अमृत्यु का वरदान था, तब प्रह्लाद की चिन्ताएं दूर करने के लिए, समस्त प्राणियों की चिन्ताओं को समाप्त करने के लिए वैशाख शुक्ल १४ को नृसिंह ने प्रगट होकर सारे लोगों की चिन्ताएं दूर कीं, और हिरण्यकश्यप का अपने नाखूनों से वध करके प्रह्लाद को पूर्ण चिन्तामुक्त किया।

इस वर्ष नृसिंह जयन्ती ८-५-९० को सम्पन्न हो रही है, और इस दिन हम इस साधना को सम्पन्न करें, तो निश्चय ही हम अपनी सारी चिन्ताओं समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं, और नये प्रकार से जीवन का प्रारम्भ कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह साधना अभी तक पूर्ण रूप से गोपनीय रही थी, परन्तु यह आज के युग में मानव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साधना है, सौ काम छोड़ कर के भी इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए।

साधना रहस्य

इस साधना को नृसिंह जयन्ती या किसी भी चतुर्दशी को सम्पन्न की जा सकती है, यह एक दिन की साधना है, यह दिखने में भले ही सामान्य साधना दिखाई दे, परन्तु इसका प्रभाव अचूक और महत्वपूर्ण है, यह साधना दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में तीन उपकरणों की जरूरत होती है,
१) नृसिंह महायंत्र– जो चिन्ता मुक्त मंत्रों से सिद्ध हो,
२) नृसिंह माला–जो मृत्यु भय मुक्ति साधना से ओत-प्रोत हो,
३) अमृत बीज– ।

साधक जिस दिन साधना सम्पन्न करना चाहे, उस दिन अपने सामने पात्र में इन तीनों उपकरणों को रखें, और जल से धोकर पोंछकर कुंकुम का तिलक करें, और हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक अपने जीवन की तथा पूरे परिवार के जीवन की समस्याओं और चिन्ताओं से मुक्त होने के लिए नृसिंह साधना सम्पन्न कर रहा हूं।

इसके बाद तेल का दीपक लगा लें, और दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर बैठ जाय, और सामने रखी हुई नृसिंह माला से २१ माला मंत्र जप करें।

यह मंत्र छोटा होते हुए भी महत्वपूर्ण है, और इसका प्रभाव अपने आप में पूर्ण प्रभावयुक्त है, अतः २१ माला मंत्र जप करने में ज्यादा से ज्यादा एक घंटा लगता है।

नृसिंह मंत्र

ॐ क्लीं नृसिंह क्लीं फट्

जब मंत्र जप पूरा हो जाए, तब साधक नृसिंह यंत्र और माला को किसी मंदिर में जा कर रख दे, या नदी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें, इस प्रकार यह साधना पूर्ण मानी जाती है।

आप इस बार यह साधना करके तो देखिए, आप स्वयं आश्चर्यचकित रह जायेंगे, कि यह साधना आपके पूरे जीवन को जगमगाहट देने में पर्याप्त है।

समाधान

प्रिय !

यों तो जनवरी का अंक अत्यन्त सारगर्भित, सुन्दर और आकर्षक है, पर इसमें छपे चित्र अश्लील हैं, और भाषा गंदी, अप्सरा का वर्णन करते हुए आपने लिखा है, कि अप्सरा की "मुट्ठी में आने लायक पतली सी कमर" पढ़ कर शर्म सी आ रही है, और शायद पत्रिका पढ़ कर उसे मेरे मुंह पर दे मारते हैं।

—रणजीत चौबे, बंबई

प्रिय चौबे जी,

मुझे आपका पत्र पढ़ कर आश्चर्य हुआ, आपने पत्रिका के चित्र अश्लील बताये, क्या "गीत गोविन्दम्" जैसे महान ग्रन्थ के चित्र अश्लील हो सकते हैं, शायद अश्लीलता की परिभाषा आपको ज्ञात ही नहीं, यदि ये कलात्मक चित्र अश्लील हैं, तो फिर कोणार्क, खजुराहो, अजन्ता, एलोरा के भित्ति चित्र घोर अश्लील हैं, और भारत सरकार को इन सब मूर्तियों को और कलात्मक चित्रों को समुद्र में फेंक देना चाहिए, अश्लीलता चित्रों में नहीं व्यक्ति की दृष्टि में होती है, और वही उभर कर होठों पर लेखनी पर आ जाती है।

आपने "मुट्ठी में आने लायक पतली सी कमर" का जिक्र किया, आप बताइये अप्सरा का यदि वर्णन किया जाय, तो क्या उसकी कमर का वर्णन यों किया जाय कि "अप्सरा की कमर बहुत मोटी भारी थुलथुल थी" और फिर इस शब्द में आपको अश्लीलता लगी तो फिर संत तुलसीदास जी ने राम चरित मानस में सीता वाटिका प्रसंग में सीता की कमर का वर्णन करते हुए कहा है, कि "सीता की कमर और नाभि प्रदेश अत्यन्त कोमल और मुट्ठी में आने लायक थी, जिसे देख कर राम मुग्ध हो गये", तब तो फिर तुलसीदास घोर अश्लील थे, कि उन्होंने मां सीता का वर्णन ऐसा कर दिया, वाल्मीकि ने सीता के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए लिखा है, कि सीता का वक्षस्थल अत्यन्त उन्नत था, तो वाल्मीकि भी अश्लील थे, और स्वयं शंकराचार्य ने मां पार्वती का वर्णन करते हुए आनन्द लहरी में लिखा है, कि "पार्वती के वक्षस्थल उफनते हुए समुद्र की तरह लग रहे हैं", तो क्या शंकराचार्य भी अश्लील हैं।

चौबे जी! अश्लीलता पत्रिका में नहीं है, आपकी भावनाओं की बात कह नहीं सकता, और फिर पत्रिका को मुंह पर फेंकने और मुंह पर खाने का खेल समझ में नहीं आया, पत्रिका तो पढ़ने लायक और साधना के लायक है, इस प्रकार से खेलने लायक तो यह पत्रिका नहीं है।

—सम्पादक

"जनवरी का अंक अत्यन्त भव्य, सुन्दर, और आकर्षक है, इसके प्रत्येक शब्द और साधना में एक उच्चता और भव्यता है, एक-एक चित्र और एक-एक पंक्ति संजो कर रखने लायक है।"

विद्यापति सहाय फैजाबाद

बम्बई यज्ञ में हम लोगों ने यज्ञ में भाग लिया था, परन्तु अभी तक हमें पत्रिका प्राप्त नहीं हुई।

के०एम० कर्वा, एल०बी० टिबनीस,
एल०के० हुकदार, एम०पी० राले,
बी० राय आदि

जनवरी और फरवरी के अंक उन सभी सदस्यों को भिजवा दिये थे, जिनकी पत्रिका से संबंधित धनराशि कार्यालय में जमा है, परन्तु आप लोगों ने लगभग २०० नामों के साथ जो पत्र कार्यालय को भेजा है, पर कार्यालय में आपकी तरफ से पत्रिका से संबंधित धनराशि जमा नहीं है, इसलिए आपको पत्रिका नहीं पहुंची होगी, कृपया आपने जिनके पास पत्रिका से संबंधित धनराशि जमा करवाई हो, उनसे जोधपुर कार्यालय से प्राप्त पत्रिका की रसीद प्राप्त कर लें, और हमें सूचित करें, जिससे कि आपको पत्रिका भेजी जा सके, फिलहाल आपसे संबंधित धनराशि पत्रिका कार्यालय में जमा नहीं है।

—सम्पादक—

"मैंने "नारायण" मंत्र जप का अनुष्ठान संपन्न किया, और फलस्वरूप मेरी लड़की की सगाई स्वतः ही तय हो गई, मुझे कोई परेशानी नहीं हुई और मेरा मित्र विधान सभा का सदस्य भी बन गया, जिसके लिए मैंने उपरोक्त अनुष्ठान बोला था।"

—केदार सेठ-शिवरामपुर

"गुरुदेव की वाणी से संबंधित कैसेट मैं हर क्षण सुनता हूं जब भी मैं उदास होता हूं तो कोई न कोई कैसेट लगा देता हूं और इससे मेरे स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ रहा है, मैं पहले से ज्यादा स्वस्थ और तन्दुरस्त अनुभव करने लगा हूं।

—हरिशंकर जाजलिया

बम्बई यज्ञ और वाराणसी यज्ञ से संबंधित सैकड़ों प्रशंसात्मक पत्र, पत्रिका कार्यालय को प्राप्त हुए हैं, इन सब को व्यक्तिगत उत्तर देना संभव नहीं है, मैं इन पंक्तियों के माध्यम से उन सभी प्रशंसा करने वाले पत्रिका सदस्यों के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूं, वास्तव में ही बम्बई महायज्ञ और वाराणसी में सम्पन्न यज्ञ सराहनीय थे, और इसके लिए श्री रणजीत चौबे, श्री प्रतापशंकर पंड्या, श्री एस०के० बनर्जी आदि के प्रयास अथक सराहनीय थे।

—सम्पादक—

हिडिम्बा साधना शिविर

एवं महायज्ञ

मनाली - (कुल्लू) हि०प्र०

(६-७-८- मई १९९०)

हिमाचल प्रदेश अपने आप में देवताओं की घाटी कहलाता है, और आज भी यहां सशरीर देवता विचरण करते रहते हैं, यही नहीं अपितु जितने सिद्ध योगी, यति और सन्यासी हिमाचल प्रदेश में विचरण कर रहे हैं, उतने पूरे भारतवर्ष में भी नहीं होंगे।

इसीलिए हिमाचल के प्रति प्रत्येक साधक की एक भावना होती है, एक ललक होती है, एक इच्छा होती है, कि वह साल में एक बार हिमाचल प्रदेश जाय, और वहां की प्रकृति का आनन्द ले, देवताओं के दर्शन करे, उच्च-कोटि के तपस्वियों के चरणों में बैठे, और उनसे वह सब कुछ प्राप्त करे, जो जीवन का उद्देश्य और लक्ष्य है।

मां हिडिम्बा हिमाचल प्रदेश की कुल देवी है, और समस्त हिमाचल में हिडिम्बा को अत्यन्त सम्मान के साथ देखा जाता है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष देवता है, क्योंकि यह प्रत्यक्ष सिद्धिदायिनी है, और साधना करने पर वह तुरन्त ही साधक के मनोरथ पूर्ण करने में सफल है।

केवल हिमाचल प्रदेश के ही नहीं, अपितु पूरे भारत वर्ष के साधकों और विशेष कर हिमाचल प्रदेश के सन्या-सियों की यह प्रबल इच्छा रही है, कि हिमाचल प्रदेश में ही हिडिम्बा से सम्बन्धित साधना शिविर सम्पन्न हो, और पूर्ण विधि-विधान के साथ मां हिडिम्बा की साधना पूर्ण हो, जिससे कि उसके प्रत्यक्ष दर्शन हो सकें, जिससे कि साधकों के मनोरथ पूर्ण हो सकें, जिससे कि जीवन के अभाव दूर हो सकें।

हिमाचल प्रदेश की राज दुलारी

मनाली को हिमाचल की "राजदुलारी" कहा जाता है,

या दूसरे शब्दों में वह राजकुमारी है, वह पर्वतों की अत्यन्त सुन्दर अप्सरा है, वह एक ऐसा स्थान है, जहां पग-पग पर प्राकृतिक वैभव और सुन्दरता बिखरी पड़ी है, इसी मनाली स्थल पर इस बार मां हिडिम्बा से सम्बन्धित साधना शिविर सम्पन्न होने जा रहा है।

मनाली जाने के प्रधानतः दो रास्ते हैं, चण्डीगढ़ से कार द्वारा मण्डी जा करके भी मनाली पहुंचा जा सकता है, और दिल्ली से वायुयान के द्वारा कुल्लू जा कर वहां से कार द्वारा मनाली सरलता से जा सकता है, ये दोनों स्थान मनाली के निकट हैं, और मात्र बस द्वारा या कार द्वारा इन स्थानों से मनाली पहुंचा जा सकता है, प्राकृतिक वैभव की दृष्टि से, सुन्दरता की दृष्टि से, आनन्द की दृष्टि से, तनाव मिटाने की दृष्टि से और सभी दृष्टियों से, पूर्णता प्राप्त करने की दृष्टि से मनाली सबसे अधिक उपयुक्त स्थान है, प्रत्येक साधक को चाहे वह भारत के किसी भी कोने में हो इस अवसर पर तो अवश्य ही साधना शिविर में पहुंचना चाहिए, और पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में इस अद्वितीय हिडिम्बा साधना शिविर को पूर्णता के साथ सम्पन्न करना चाहिए।

साधना समय

यह ६-७-८ मई १९९० को मनाली में ही १ ८ कुण्डीय महायज्ञ के रूप में हिडिम्बा प्रत्यक्ष साधना शिविर सम्पन्न होने जा रहा है, मनाली छोटा सा पर्वतीय स्थल है, इसलिए वहां जाने पर आसानी से शिविर स्थल का पता चल सकता है, प्रत्येक साधक को ५ मई ९० की शाम तक पहुंच जाना चाहिए।

साधना से सम्बन्धित विशेष जानकारी के लिए निम्न आवेदनकर्ताओं से सम्पर्क स्थापित कर और अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं –

१- डॉ एम०आर वशिष्ठ
पन्डोह - मन्डी (हि०प्र०)

२- डॉ सुरेन्द्र निखिल गुप्ता
सैंज - कुल्लू (हि०प्र०)

३- श्री राजा महेश्वर सिंह
पार्लियामेन्ट सदस्य
कुल्लू (हि०प्र०)

४- श्री कर्मदत्त शर्मा
एस० वी० आय० मन्डी (हि०प्र०)

५- श्री रतनलाल राव
मन्डी (हि०प्र०)

६- श्री के०टी० शर्मा
सोलन (हि०प्र०)

७- श्रीमती परवीन
श्री बालकृष्ण सेवक
गिलबर्ट होटल, मनाली

८- श्री परमानन्द
कन्या हाई स्कूल, सुन्दर नगर (हि०प्र०)

लक्ष्मी गणपति महारुद्र शिविर एवं महायज्ञ

मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

(२७-२८-२९ मई १९९०)

दिल्ली से हरिद्वार या देहरादून जाते समय मार्ग में एक अत्यन्त सुन्दर और पवित्र स्थान दिखाई देता है, जिसे मुजफ्फरनगर कहा जाता है, इस नगर की यह विशेषता है, कि यहां के लोगों में धार्मिक भावना और आस्था विशेष रूप से है, और इसी भावना के फलस्वरूप इन सब लोगों ने एक स्वर से नगर के मध्य में १०८ कुण्डीय लक्ष्मी गणपति महारुद्र साधना शिविर एवं महायज्ञ सम्पन्न करने का निश्चय किया है, जिसमें पूरे भारतवर्ष के लोग आमंत्रित हैं।

इस शिविर की कई विशेषताएं हैं, पहली बार बिल्कुल नवीन पद्धति से लक्ष्मी प्रत्यक्ष प्रयोग सम्पन्न होगा इसके साथ ही साथ विश्वामित्र प्रणीत उस साधना को सम्पन्न किया जायेगा, जिससे कि गणपति पूर्ण रूप से वरदायी हों, और इन तीन दिनों में भगवान शिव से संबंधित पूर्ण महाभिषेक प्रयोग सम्पन्न होगा, जो कि भारतवर्ष में पहली बार पूर्णता के साथ सम्पन्न होगा।

प्रत्येक साधक को इस शिविर में तो भाग लेना ही चाहिए, क्योंकि यह केवल शिविर ही नहीं है, अपितु प्रत्यक्ष अनुभूति साधना शिविर है, प्रत्यक्ष देव आह्वान प्रयोग है, प्रत्यक्ष सिद्धिदायक शिविर है, इसलिए भारतवर्ष के प्रत्येक साधक को इस शिविर में अवश्य ही भाग लेना चाहिए।

और दूसरी बात यह है, कि यहां से हरिद्वार अत्यन्त निकट है, साधक शिविर से पहले या शिविर के बाद हरिद्वार दर्शन एवं गंगा स्नान का लाभ उठा सकता है, इससे भी बड़ी बात यह है, कि पूज्य गुरुदेव इस साधना शिविर में उन प्रयोगों को सम्पन्न करवायेंगे, जो कि अपने आपमें अद्वितीय दुर्लभ और महत्वपूर्ण हैं, पूज्य गुरुदेव का आह्वान है कि प्रत्येक व्यक्ति को इस साधना शिविर में भाग लेना ही चाहिए, यह शिविर सनातन धर्मशाला, रानी झांसी चौक मुजफ्फर नगर में सम्पन्न हो रहा है।

विशेष जानकारी के लिए आप निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं—

डॉ० पी० सी० अग्रवाल
सीनियर पैथोलोजिस्ट
जिला अस्पताल, मुजफ्फर नगर (उ०प्र०)
टेलीफोन—७८५८

साधना सामग्री

आपको धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, इस प्रपत्र में अप्रैल से संबंधित साधना सामग्री प्रकाशित है, आप जो सामग्री चाहते हैं, उसके सामने सही का निशान बना दें, और यह प्रपत्र फाड़ कर हमें आज ही भेज दें, जिससे कि आपको वी०पी० से यह साधना सामग्री भेजी जा सके।

दुःख की बात यह होती है कि आप पत्रिका आने पर तो निर्णय नहीं लेते, और जब समय बहुत कम बचता है तब आप प्रपत्र भेजते हैं तब सामग्री आप तक पहुंचने में विलम्ब हो जाता है, अतः आप शिविर का आनन्द और लाभ उठा नहीं पाते, इसलिए आपको चाहिए कि यह पत्रिका प्राप्त होते ही जो सामग्री चाहिए उस पर तुरन्त सही का निशान लगाकर प्रपत्र को अलग कर हमें भेज दें।

लेख का नाम	पृष्ठ संख्या	सामग्री	मूल्य
सर्व सिद्धि साधना प्रयोग	६	सर्व सिद्धि महायंत्र	६० रु०
		सियार सिंगी	३०)रु०
		मधुरूपेण रुद्राक्ष	३०)रु०
सम्मोहन साधना	१३	मोहिनी महायंत्र	१५०)रु०
		सम्मोहन माला	६०)रु०
श्री शनि प्रयोग	१७	शनि महा यंत्र	६०)रु०
धूमावती प्रयोग	१९	शत्रुच्चाटन यंत्र	१२०)रु०
		व्यवसाय वर्धक यंत्र	१२०)रु०
		तंत्र निवारण यंत्र	१५०)रु०
		रक्षा यंत्र	१२०)रु०
धूमावती प्रयोग	२६	धूमावती महायंत्र	१५०)रु०
		काले हकीक मनकों की माला	८०) रु०
नाभिदर्शना अप्सरा प्रयोग	३०	नाभिदर्शना महायंत्र	२४०)रु०
		नाभिदर्शना चित्र	१०)रु०
		नाभिदर्शना अप्सरा माला	८०)रु०
राहु प्रयोग	३५	राहु महायंत्र	६०)रु०
		राहु माला	६०)रु०
नृसिंह साधना	३७	नृसिंह महायंत्र	८०)रु०
		नृसिंह माला	६१)रु०
		अमृत बीज	३०)रु०

कायाकल्प साधना—कवर पृष्ठ २—(यह साधना जोधपुर में ही सम्पन्न होगी)। ●

कामदेव रति साधना

और फिर इस प्रयोग में कामदेव और रति प्रयोग का भी समावेश किया गया है, देवताओं में सर्वश्रेष्ठ सौन्दर्यशाली पुरुष कामदेव है, तो बेदाग अद्वितीय सौन्दर्यवती स्त्री रति, और इस प्रयोग से साधक के शरीर पर और चेहरे पर एक ऐसा सम्मोहन और आकर्षण आ जाता है, कि वह दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, साथ ही साथ इस साधना से उसके शरीर से कुछ ऐसी विद्युत तरंगें प्रवाहित होने लगती हैं, जिससे कोई भी पुरुष या स्त्री सम्मोहित हो जाते हैं, और उसके अनुकूल बन जाते हैं।

यह एक दिन की साधना है, इस साधना में आठ तथ्यों का समावेश स्वतः सम्भव है। १) पूरे शरीर का काया कल्प प्रयोग, २) पूरे जीवन की बाधाओं और समस्याओं के निराकरण का काया कल्प, ३) सम्मोहन और वशीकरण सिद्धि, ४) पूर्ण यौवन और सौन्दर्य प्राप्त करने की सिद्धि, ५) रति प्रिय साधना और कामदेव साधना, ६) लक्ष्मी सम्मोहन सिद्धि प्रयोग, ७) पुष्पदेहा अप्सरा वशीकरण और ८) वृद्धावस्था को यौवन में परिवर्तित करने का प्रयोग।

इस साधना में ये सभी प्रयोग समाहित हैं, क्योंकि काया कल्प साधना में इन तथ्यों की साधना होती ही है, स्वयं पूज्य गुरुदेव इस एक दिवसीय साधना में विशेष मंत्रों से सम्पूर्ण शरीर और जीवन के काया कल्प हेतु प्रयोग सम्पन्न करायेंगे और उस गोपनीय विधि को स्पष्ट करेंगे, जिसे घर जाकर श्रद्धापूर्वक एवं नियमपूर्वक सम्पन्न करने से पूर्ण काया कल्प सिद्धि प्राप्त होती है।

साधना समय

यह एक दिवसीय साधना शिविर है, जो कि १९-५-९० की रात्रि को सम्पन्न होगी। आप १९ मई को दोपहर तक जोधपुर आ सकते हैं, और दूसरे दिन सुबह पुनः प्रस्थान कर सकते हैं। रविवार होने की वजह से आप समय पर अपने घर पहुंच सकते हैं।

इस एक दिवसीय शिविर में भाग लेने का कोई शुल्क नहीं है, इससे सम्बन्धित यन्त्र, चित्र, आवास एवं भोजन व्यवस्था सब कुछ पत्रिका कार्यालय प्रदान करेगा पर आपके लिए यह आवश्यक है, कि यदि आप इसमें भाग लेना चाहें तो १९-५-९० को दोपहर तक जोधपुर पहुंच जांय, रात्रि कालीन शिविर में भाग लें, दूसरे दिन अपने घर रवाना हो सकते हैं और इसका प्रवेश शुल्क मात्र पांच पत्रिका सदस्य है, आप अपने साथ पांच नये पत्रिका सदस्यों के नाम व पते तथा उनसे सम्बन्धित धनराशि ५२५) रु० लेते आवें, और कार्यालय में जमा करवा दें, हम निष्ठापूर्वक उन्हें पूरे वर्ष भर पत्रिका प्रदान करते रहेंगे और आपकी तरफ से उन्हें धन्यवाद पत्र भी देंगे, धनराशि आप अग्रिम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेज सकते हैं, या अपने आने की सूचना देते हुए १९-५-९० को यहां आ कर भी जमा करवा सकते हैं, हमें आप पर पूरा भरोसा है।

यह सौभाग्य पर्व है, यह इस वर्ष का श्रेष्ठतम अद्वितीय एक दिवसीय शिविर है, यह पुरुषों और स्त्रियों के लिए समान रूप से यौवनप्रदायक शिविर है, सिद्धि प्रदायक शिविर है, पूर्णता प्रदायक शिविर है।

वास्तव में ही यह आपके जीवन का एक श्रेष्ठतम पर्व है, जिसे आप चूकना नहीं चाहेंगे।

सम्पर्क : मंत्र तंत्र-यंत्र-विज्ञान, डा० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)।

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एस. आर. जे. २६६७/८६-८७

प्रकाशित

भारत का गौरवशाली प्रकाशन

गुरू—सूत्र

° परम पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के अन्तरंग भाव सूत्र; जो कि मोतियों से भी मूल्यवान और हीरों से भी ज्यादा जगमगाहट भरे हैं ।

°° पूज्य गुरुदेव के जीवन का निचोड़, जीवन की कठोर साधनाओं के क्षण, भावनाओं का सहज प्रवाह, और शिष्यों के लिए तो गीता से भी ज्यादा पवित्र ग्रन्थ ।

°°° जीवन की दुर्लभ सिद्धियों और साधनाओं का स्रोत.. .....वे चिन्तन, जिनके माध्यम से शिष्य निश्चय ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है, महाशक्तियों को प्रत्यक्ष कर सकता है, गुरुदेव को अपने हृदय में पूर्णता के साथ स्थापित कर सकता है ।

°°°° एक अनमोल ग्रन्थ, जिसमें गुरुदेव ने साधना की उन बारीकियों को स्पष्ट किया है, जो अब तक गोपनीय थी, रहस्यमय थी, दुर्लभ थी ।

°°°°° और क्या आप विश्वास कर सकेंगे, कि ११२ पृष्ठों की पुस्तक मात्र छः रुपये में........ पर हमने इस मंहगाई के युग में भी इस असंभव को संभव कर दिखाया है ।

मूल्य - मात्र छः रुपये

—: प्राप्ति स्थान :—

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कोलोनी
जोधपुर ३४२००१ (राज०)